अक्टूबर-२०१९ ◆ वर्ष ८ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

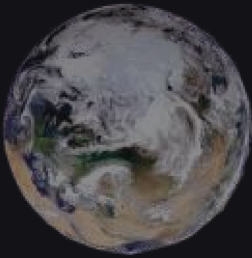

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०१९

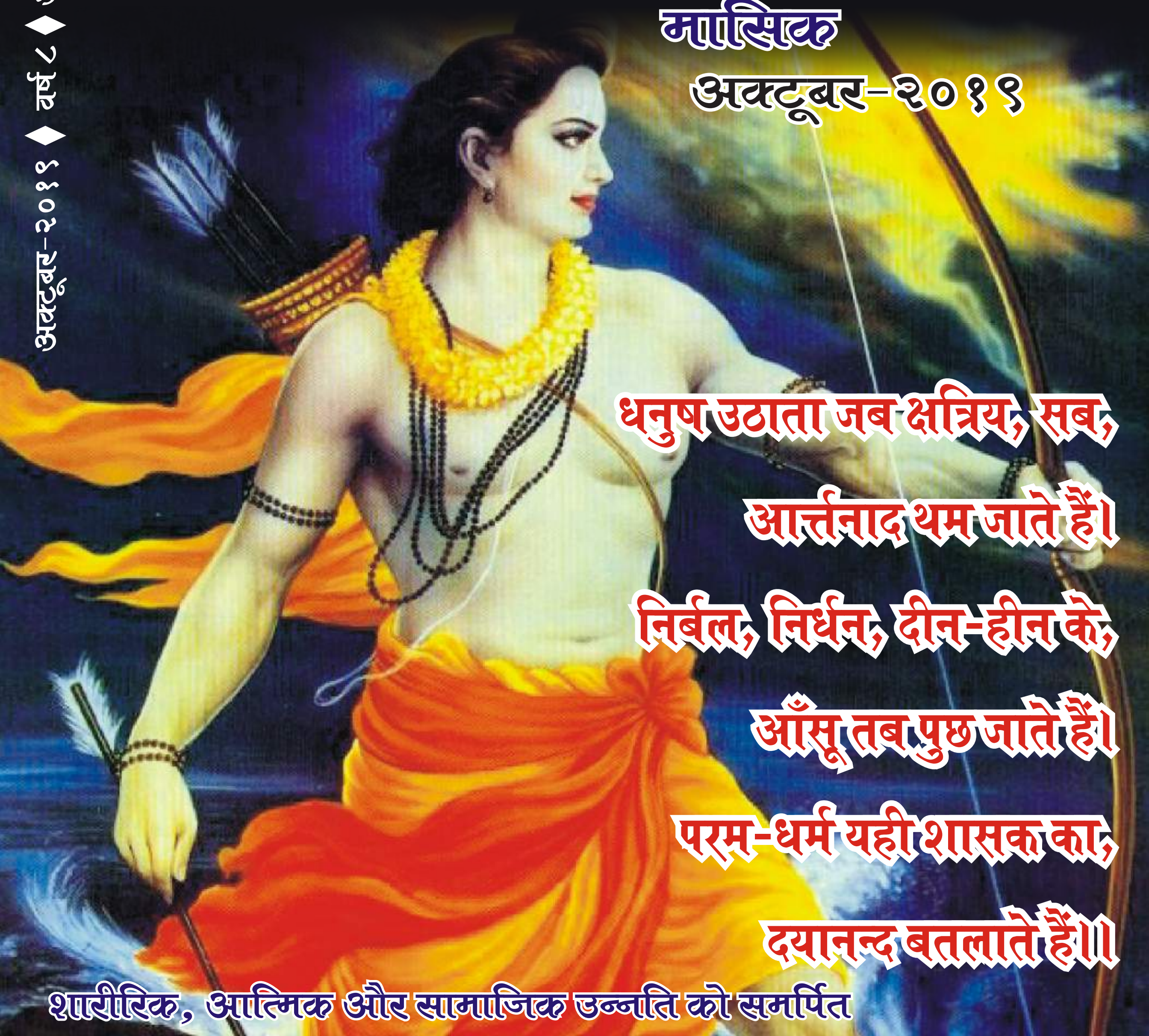

धनुष उठाता जब क्षत्रिय, सब,
आर्त्तनाद थम जाते हैं।
निर्बल, निर्धन, दीन-हीन के,
आँसू तब पुछ जाते हैं।
परम-धर्म यही शासक का,
दयानन्द बतलाते हैं।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ६४

दुनियाँ ने है माना
एम.डी.एच. मसालों का है जमाना
एम डी एच मसाले 100 से अधिक देशों को निर्यात किये जाते हैं।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Rajmah masala
Kitchen King
Sambhar
Sabzi
DEGGI MIRCH
Shahi Paneer masala
KASOORI METHI
Dal Makhani masala
Chunky Chat masala
Pav Bhaji masala
Chana masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
ESTD. 1919
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
आश्विन शुक्ल नवमी
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

October - 2019

समाचार २८
हलचल २९

०४ वेद सुधा
०६ तहाफुज-ए-इन्सानियत
१२ मजबूत बनेगा लोकतंत्र
१५ गलत बीज बीजने बन्द करने होंगे
१८ रसातल
२० दु:ख क्या है?
२२ Interpretation of Vedas
२४ सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/१९
२५ अहिंसा परमो धर्म!
२६ अल्पसंख्यकता मीठा जहर है
२७ स्वास्थ्य- कब्ज की शिकायत
३० सत्यार्थ पीयूष- ईश्वर का स्वरूप

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - ८ | अंक - ०५ | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर मुद्रण

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्धः कार्ष्णं वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः।
स सद्य एति पूर्वस्मादुत्तरं समुद्रं लोकान्त्संगृभ्य मुहुराचरिक्रत्।।

– अथर्ववेद का.११/प्रपा.२४/अनु.३/सू.५/मं.६

शब्दार्थ– (ब्रह्मचारी समिधा समिद्धः) जो ब्रह्मचारी समिधा (पृथिवी लोक, सूर्य तथा अन्तरिक्ष लोक के विद्यारूपी यज्ञ) से प्रकाशित (कार्ष्णम् वसानः) काले मृग का चर्म धारण किये (दीर्घश्मश्रुः दीक्षितः एति) बढ़ी हुई दाढ़ी मोंछ वाला दीक्षित होकर चलता है। (सः सद्यः पूर्वस्मान् उत्तरत् समुद्रम् एति) वह शीघ्र ही इस (ब्रह्मचर्य रूपी) पहिले से ऊपर के (गृहस्थ रूपी) समुद्र को प्राप्त होता है और (लोकान् संगृभ्य मुहुः आचरिक्रत्) लोक संग्रह करके बारम्बार अभिमुख (अर्थात् वश में) करता है।

मन्त्र सार– ब्रह्मचारी को तीनों लोकों की विद्या प्राप्त करने में ऐसी लगन से जुट जाना चाहिए और उन लोकों की घटनाओं को इस प्रकार हस्तामलक कर लेना चाहिए कि वे उसके अन्तःकरण के लिए समिधावत् हो जायें। उनको वह ब्रह्मचारी ज्ञानाग्नि से प्रदीप्त यज्ञ-कुण्ड में डालकर यज्ञ-मण्डप की शोभा को चौगुना बढ़ा दे। उस प्रदीप्त ज्ञानाग्नि से उसका अपना हृदय रूपी मुख अत्यन्त प्रकाशित होगा। वह तेज जो ब्रह्मचारी के पवित्र मुख को प्रकाशित कर रहा है, क्षणिक न रहेगा यह तेज स्थिर होगा। यह सारा तैयारी का जमाना है- यह साधन काल है जिसमें मनुष्य साधन सम्पन्न बनता है। कर्म के बन्धन में फंसे हुये साधारण मनुष्य के लिए विषयों में प्रवृत्ति साधारण अवस्था क्या, एक प्रकार से स्वाभाविक बन जाती है। उस अवस्था को बदलना ही ब्रह्मचर्याश्रम का उद्देश्य है। प्रवृत्ति के स्थान में निवृत्ति मार्ग का आश्रय लेकर ही विषयों की दासता को त्याग कर मनुष्य उसका स्वामी बनता है। परन्तु यह निवृत्ति मार्ग, जहाँ जीवात्मा को अपनी बनावट तथा तन्निर्दिष्ट ब्रह्माण्ड की गुलामी से आजाद कर देता है, वहाँ है यह बड़ा बीहड़ रास्ता। इस दुर्गम पथ पर चलना तलवार की धार पर नृत्य करने के बराबर है। तब क्या यह मार्ग असाध्य कर्म है? साधन-शून्य पुरुषों के लिए जहाँ यह असाध्य है वहाँ साधन-सम्पन्न (पुरुषार्थी) ब्रह्मचारी के आगे इसकी सब मंजिलें अपने आप साफ हो जाती हैं और यह बेखटके इनमें से गुजर जाता है। ब्रह्मचारी को न शारीरिक बनाव चुनाव की सुध है और न उसके श्रृंगार की बुध। यह तत्व के उच्चासन की ओर दृष्टि लगाये सांसारिक फसावटों से बेलाग जा रहा है। ब्रह्मचारी जब अपने व्रत को पूर्ण करके विद्या-व्रत स्नातक होकर समावर्तन के लिए तैयारी करता है तो उसका वेश क्या होता है? काले मृग का चर्म तो उसका ओढ़ना है और दाढ़ी मूछें उसकी बहुत बढ़ी हुई हैं। अस्वाभाविक जीवन व्यतीत करते-करते जहाँ मनुष्यों को परमात्मा के दिए हुए श्रेष्ठ भोज्य पदार्थ पचाने के लिए गर्म मसालों और खटाई आदि की जरूरत होती है, वहाँ शौच के नियमों को भुलाकर मनुष्यों ने और भी अनावश्यक अवस्थायें उत्पन्न की ली हैं। ब्रह्मचारी के लिए नापित की आवश्यकता नहीं और न सेफ्टीरेजर और मशीन या कैंची की। उसके शरीर के बाल, स्वतन्त्रता से बढ़ कर जहाँ उसके अन्दर की विद्युत् को उत्तेजित करके उसकी रक्षा करते हैं वहाँ काले मृग का चर्म उसके शरीर को सर्दी-गर्मी के बाह्य आक्रमणों से बचा कर उसको निस्पृह जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाता है। ब्रह्मचारी को एक धुन लगी है और वह धुन है- तत्वान्वेषण। इसके लिए वह संसार के सुखों को न्यौछावर कर देता है और सब प्रकार के भोगों को त्याग देता है। और वह भोगों में फसे भी कैसे? जब वह प्रत्येक अवस्था में आनन्द ही आनन्द का अनुभव करता है, तब अपने त्याग के आगे इन्द्रियों को और विषयों को शिर झुकाये देखता है- जब देखता है कि सचमुच इनका स्वामी वह बन रहा है तब वह भोगों का भोग्य पदार्थ कैसे बन सकता है?

काले मृग की चर्म धारण किये, बढ़ी हुई दाढ़ी-मूंछ ब्रह्मचारी ही भोगों से भोगे जाने के स्थान में उन्हें अपना आज्ञापालक सेवक बनाता है। मनु भगवान् ने यज्ञ प्रधान देश में ही बसने की आज्ञा देके यज्ञ प्रधान देश के जो विशेषण बतलाये हैं उनमें एक विशेषण यह है कि उस प्रदेश में काले

मृग स्वतन्त्रता से विचरते हों। इसलिए काले मृग का चर्म प्राप्त करने के लिए उनके घात करने को मनुस्मृति ने भी लक्ष्य में नहीं रक्खा। जहाँ काले मृग स्वतन्त्रता से विचरते हैं वहाँ उनका चर्म उनकी स्वाभाविक मृत्यु पर प्राप्त करना बहुत सुगम है। जिस आश्रम निवासी ब्रह्मचारी ने आचार्य के संरक्षण में रहते हुए सर्दी-गर्मी की ताड़ना से ऊँचे उठकर ब्रह्मतेज को धारण कर लिया है वही दीक्षा का अधिकारी होता है- 'व्रतेन दीक्षामाप्नोति।' चाहे विद्या की पाठविधि समाप्त भी कर चुका हो परन्तु ब्रह्मचारी दीक्षा का अधिकारी उसी समय होता है जबकि वह 'व्रतस्नातक' बनने की योग्यता प्राप्त करले, तब वह पहिले समुद्र को नियमपूर्वक लाँघकर दूसरे समुद्र में प्रवेश करता है। ब्रह्मचर्य पहिला समुद्र है। जिसने इस पहिले समुद्र में गोते खाये हों, जिसने ब्रह्मचर्याश्रम में रहते हुए उसके पवित्र नियमों को तोड़ा हो, जिसे पूर्वाश्रम में ही विषयों ने भोग कर खोखला कर दिया हो वह गृहस्थाश्रम रूपी उत्तर समुद्र में प्रवेश करने का साहस क्यों करता है? इसलिये कि अविद्या ने उसको अन्धा कर दिया है और उसमें देखने की शक्ति नहीं बची। गृहस्थ रूपी उत्तर समुद्र में काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी बड़े-बड़े मगरमच्छ मुँह खोले विचर रहे हैं, भंयकर भोग की लहरें उठ रही हैं- वहाँ इन्द्रिय-दमन द्वारा सुदृढ़ रहना ब्रह्मचारी का ही काम है। ब्रह्मचर्य-साधना का फल क्या है? वेद का उत्तर है 'लोक-संग्रह।'

समुद्र अथाह है, आँधी के थपेड़े लहरों को बल्लियों ऊपर ले जा रहे हैं और उसके अन्दर मनुष्यों से भरी हुई किश्ती फस गई है। आमने-सामने की लहरों ने किश्ती को भँवर में फंसा दिया है। उस किश्ती को कौन निकाले? किनारे पर हाहाकार मच रहा है, परन्तु किसी का साहस नहीं पड़ता कि हिल सके। किश्ती के यात्री लहरों की हलचल के मद से उन्मत्त अपनी शोचनीय अवस्था को अनुभव नहीं करते। सिर में चक्कर आ रहा है और ऐसा अंधेरा छा गया है कि उन्हें अपनी हीन दशा का परिज्ञान ही नहीं। ऐसी दशा में एक तेजस्वी महात्मा जंगल में चले आ रहे हैं। एक क्षण में उन्होंने सारी अवस्था को जाँच लिया और एक दम से समुद्र में कूद पड़े। देखते-देखते यह गये! वह गये! किश्ती को जा पकड़ा और उछल कर ऊपर चढ़ गए। पतवार को भय के नशे में चूर भोगी से छीनकर अपने हाथ में लिया, और किश्ती सम्भल गई। वह लहरों की भँवर से निकली और किनारे पर लग गई। ब्रह्म को प्राप्त, ब्राह्मण, ब्रह्मचारी किसलिए तैयारी करता है? क्या विषयों का दास बनने के लिए? यदि यही उद्देश्य होता तो भौतिक गृह से आत्मिक गर्भ में पुनः प्रवेश का क्या मतलब? ब्रह्मचारी सारी तैयारी इसलिए करता है कि स्वार्थ को भूलकर संसार की पीड़ित प्रजा के दुःखहरण करने के लिए जनता का सच्चा मार्गदर्शक बने। ऐसे ब्रह्मचारी उत्पन्न करने का अधिकार आर्यावर्त्त के गुरुकुलों को था। क्या वह समय फिर लाया जा सकता है? यदि नहीं, तो संसार के पुनरुद्धार की आशा छोड़ देनी चाहिए।

– सभार– स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थ संग्रह

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर

'तहाफुज-ए-इन्सानियत' सीखे कुछ इन्सानियत

मनुष्य जीवन अन्य प्राणियों की अपेक्षा से श्रेष्ठ माना जाता है और यह सत्य भी है। परन्तु यह भी सत्य है कि मनुष्य को अगर कुछ सिखाया न जाये तो वह कुछ भी नहीं सीख सकता और पशु पक्षियों से भी गया बीता है। बहुत सारे ऐसे प्रयोग हुए हैं जिनसे यह प्रमाणित हुआ है कि न सिखाने पर मनुष्य को सामान्य चलने-फिरने-खाने इत्यादि का ढंग भी नहीं आता, तो भाषा और ज्ञान की बात तो कौन करे? अभी हम जो देखते हैं कि मनुष्य ने हर क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की है, आश्चर्यजनक उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं तो वह इसीलिए कि हमारे माता-पिता अथवा गुरुजनों ने हमें पढ़ाया, हमें सिखाया। सिखाने-सीखने का यह क्रम मनुष्य की प्रथमोत्पन्न पीढ़ी तक जाता है। परन्तु वहाँ यह यक्ष प्रश्न समक्ष आता है कि मनुष्य की उस प्रथम पीढ़ी को भाषा और ज्ञान किसने दिया? विभिन्न मज़हबों ने इसका उत्तर अपने-अपने प्रकार से दिया है। कहीं कहा गया कि अदन के बाग में ज्ञान का एक पेड़ लगा हुआ था जिसका फल खाने से आदम और हव्वा को ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्हीं से ज्ञान निरन्तर अगली पीढ़ियों तक प्राप्त होता रहा। वहाँ इस कहानी के साथ और बहुत कुछ ऐसा है जो तर्कसंगत नहीं है, सृष्टिक्रम के अनुकूल नहीं है।

यहाँ यह भी समझ लें कि यह अत्यन्त आवश्यक है कि यह ज्ञान प्रथमोत्पन्न पीढ़ी में ही संक्रमित होना चाहिए क्योंकि कहीं बीच में ज्ञान के प्रादुर्भाव की यदि हम कल्पना करते हैं तो एक बहुत बड़ा प्रश्न, जिसका हम उत्तर नहीं दे पाते हैं, वह हमारे समक्ष आता है कि इस ज्ञान के प्रादुर्भाव से पहले की जो हजारों, लाखों पीढ़ियाँ हुईं उन्होंने ज्ञान के अभाव में किस तरीके से जीवन चलाया होगा? अतः ईश्वरीय ज्ञान की अनिवार्य कसौटी है कि मानव सृष्टि की आदि में ही यह ज्ञान प्राप्त हो। निःसंदेह यह ज्ञान वेद है जो सृष्टि की आदि में परमपिता परमात्मा द्वारा मानव मात्र के कल्याण व शिक्षा के लिए दिया गया।

यहाँ यह भी संक्षेप में समझ लें कि ईश्वरीय ज्ञान न तो किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय के लिए हो सकता है और न पक्षपातयुक्त हो सकता है। बल्कि इसके विपरीत वह संसार के समस्त मानवों और मानवों ही नहीं समस्त प्राणियों के प्रति कल्याणकारी होना चाहिए। ईश्वरीय ज्ञान की और भी कुछ कसौटियाँ हैं, पर इस आलेख का मुख्य विषय यह न होने के कारण उस पर विस्तार में नहीं जायेंगे।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि यह ज्ञान कैसा होना चाहिए। इसमें किन-किन बातों का समावेश होना चाहिए। अत्यन्त मोटे रूप में सोचें, तो वर्तमान में जिस प्रकार हम देखते हैं कि माता-पिता अपने बालक को उन्नति के उच्चतम सोपान पर अवस्थित करने के उद्देश्य से, उन्हें व्यक्तिगत उन्नति, पारिवारिक उन्नति, सामाजिक उन्नति, किससे कैसे वर्तना चाहिए, किन चीजों से बचना चाहिए, किन चीजों को अपनाना चाहिए, कौन मित्र है, कौन शत्रु है, इन लोगों से किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, राष्ट्र के प्रति उसका क्या दायित्व है इत्यादि-इत्यादि बातों की शिक्षा देते हैं तब जाकर वह उत्कृष्ट मानव के रूप में अपने-आपको समायोजित कर पाता है, प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, कीर्ति और यश का अर्जन करता है। यहाँ यह भी रेखांकित करना उपयुक्त है कि इस क्रम में नैतिकता का सार्वत्रिक समावेश कराना माता-पिता कदापि नहीं भूलते हैं।

अब हम सृष्टि के प्रारम्भ की बात करें तो प्रथम पीढ़ी का माता-पिता तो स्वयं ईश्वर है जिसने यह समस्त सृष्टि रची है और मनुष्यादि प्राणियों को भी उत्पन्न किया है। अब कुछ ऐसी ही शिक्षा, जिससे मनुष्य अपनी आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति करते हुए, सुख प्राप्त कर सके तथा अपने चारों ओर के परिवेश से तादात्मय स्थापित कर सके, ईश्वरीय ज्ञान में होनी चाहिए। ऐसा

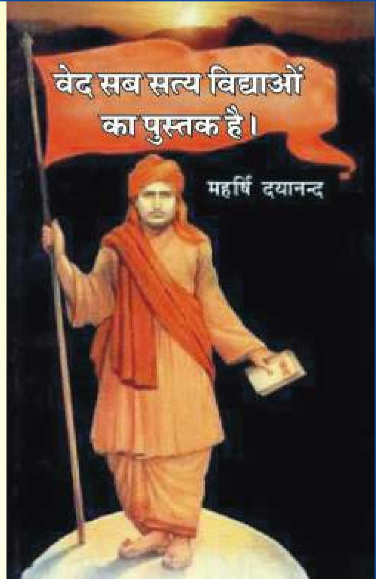

सत्य विद्याओं से ही सम्भव है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम में स्पष्ट लिखा कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है', अतएव इसकी शिक्षाओं का अनुसरण अत्यन्त आवश्यक है। अब क्योंकि मनुष्य का परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना है, अतः उसकी शिक्षा का मूल लक्ष्य अध्यात्म के मार्ग पर चलना और निःश्रेयस को प्राप्त करना है ही। परन्तु इसके साथ-साथ इस संसार में रहते हुए अन्य लोगों के साथ, पितरों के साथ, विद्वानों के साथ, राजा के, अर्थात् शासक के साथ, यहाँ तक कि अन्य जीव-जन्तु, पशु-पक्षियों के साथ और उससे भी आगे वृक्ष, वनस्पति, औषधि, नदी, समुद्र, वायु इन सबके साथ उसका व्यवहार कैसा हो ताकि समरसता पूर्ण वातावरण में अन्यों व इस सृष्टि के प्रति वह अपने कर्तव्य का पालन कर सके और अधिकाधिक सुख का सम्पादन कर सके ऐसा मार्गदर्शन अत्यावश्यक है। इसलिए वेदों में प्रमुखता से आत्मोन्नति की शिक्षा के साथ भौतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, प्रजनन विज्ञान, गर्भ विज्ञान, राजनीति विज्ञान आदि वे सभी विद्याएँ जो मनुष्य के लिए आवश्यक हैं, बीज रूप में उपस्थित हैं।

दूसरे शब्दों में कहें तो तृण से लेकर परमेश्वर पर्यन्त समस्त ज्ञान बीज रूप में वेदों में उपलब्ध है और यह सृष्टि के सभी मानवों के लिए है। तो कोई यह न समझे कि किसी देश विशेष अथवा समुदाय विशेष के लिए ही वेद ज्ञान है। अच्छा! जब सबके लिए है तो यह भी आवश्यक है कि इन शिक्षाओं में सबके ही कल्याण की बात होनी चाहिए। किसी एक समुदाय का पक्षपात करने की बात ही उत्पन्न नहीं होती क्योंकि ऐसा होते ही वह फिर ईश्वरीय ज्ञान रहेगा ही नहीं। वेदों की शिक्षाओं को हम देखते हैं तो उनको इस कसौटी पर खरा पाते हैं। एक और बात है क्योंकि वेद सृष्टि के आदि में थे इसलिए बाद में जो मत-मतान्तरों की बाढ़ आई उसका जिक्र वेदों में सम्भव ही नहीं है। इसीलिए वेदों में मनुष्य समाज का केवल एक ही विभाजन है, और वह है आर्य और दस्यु। अर्थात् श्रेष्ठ लोग और नीच प्रवृत्ति के लोग।

इस आलेख का जो विषय है उस पर आने से पूर्व वेद ज्ञान के बारे में यह अति संक्षिप्त भूमिका हमें आवश्यक प्रतीत हुई। अब हम प्रस्तुत विषय पर आते हैं। इतिहास के कालखण्ड में मनुष्य समाज के एक समुदाय विशेष में, उनके नेतृत्व द्वारा, ईश्वरीय शिक्षाओं के प्रणेता होने का दावा करते हुए, अनेक व्यवस्थाएँ दी गईं और जो उन व्यवस्थाओं को न मानें, उनके प्रति अत्यन्त क्रूर और अमानवीय व्यवहार करने की बात भी उन शिक्षाओं में सम्मिलित है उदाहरणार्थ- जो स्वयं को ईमान वाला मानते हैं उनकी ईश्वरीय किताब में, जो ईमान वाले नहीं हैं (उनकी दृष्टि में) उनसे कैसा व्यवहार करें इसका निर्देश मिलता है- 'फिर जब हराम के महीने में बीत जाए तो 'मुशरिकों' को जहाँ कहीं पाओ, कत्ल करो, और उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर यदि वे 'तौबा' कर लें नमाज कायम करें और जकात दें, तो उनका मार्ग छोड़ दो। निःसन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है। (पारः१०/सूरः ९/आ. ५)। ऐसी व्यवस्थाओं को कितना भी defend किया जाये, बचना सम्भव है नहीं। तो इसके जवाब में एक नया काम कुछ वर्षों से तेजी से अस्तित्व में आया है। उसके पीछे सोच है कि आक्रमण सबसे अच्छी नीति है। और झूठ यदि बार-बार बोला जाएगा तो वह सत्य का स्वरूप धारण कर लेगा। हम अपने आपको अगर defend नहीं कर सकते हैं तो दूसरों पर आक्रमण कर दें। इस नीति के अन्तर्गत अनेक आलेखों की और अनेक प्रवचनों की एक बाढ़ इन्टरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया पर और यू ट्यूब इत्यादि चैनलों पर आ गयी है जो उक्त नीति (दुर्नीति) के अन्तर्गत पैर पसार रही है।

पाठकों को स्मरण होगा कि हमने अर्द्धसत्य के नाम से जो पिछला सम्पादकीय दिया था, उसमें रेखांकित किया था कि किस तरह से अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए लोग मूल चीज को Distort करके इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि जिससे उनका स्वार्थ सध जाये।

ऐसे लोगों को तथ्यों को तोड़ने मरोड़ने में तनिक भी शर्म की अनुभूति नहीं होती। गत दिनों अचानक तहाफुज-ए-इंसानियत (Tahafuj E insanyat) नाम के एक यूट्यूब चैनल को देखने का अवसर मिला। श्री राहुल आर्य अपने वीडियो के माध्यम से, संसार में जिन शिक्षाओं पर चलकर अशान्ति फैल रही है, उसके बारे में बात करते हैं तो उन पर और उनके माध्यम से वेदों पर आक्रमण करने में उक्त चैनल अग्रसर होता है। ऐसा करते समय वह भूल जाता है कि वेद ज्ञान आर्य समाज अथवा हिन्दुओं अथवा भारतीयों तक सीमित नहीं है। जैसाकि हमने ऊपर कहा कि यह पूरे विश्व की मानव जाति के लिए है तो स्वयं इस यूट्यूब चलाने वाले को भी वेद को इस परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। खैर तहाफुज-ए-इंसानियत का कहना है कि एक सज्जन गाजी महमूद

आर्य समाज में प्रविष्ट हुए और उन्होंने अपना नाम धर्मपाल रखा। धर्मपाल जी को आर्य समाज में रहते हुए ऐसा लगा कि वैदिक शिक्षाएँ कल्याणकारी न होकर अयुक्त ही हैं। अतः उन्होंने आर्य समाज को छोड़ दिया और उन्होंने एक पुस्तक लिखी 'वेद और स्वामी दयानन्द'। इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द के भाष्य को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने का पाप किया है। गाजी महमूद धर्मपाल, बी.ए. लुधियाना ने और इनके हवाले से तहाफुज-ए-इंसानियत ने यजुर्वेद के १३वें अध्याय के १२वें मंत्र पर महर्षि दयानन्द के भाष्य को प्रस्तुत करते हुए उस पर आरोप लगाया है कि इसमें भी अपने धर्म को न मानने वालों के साथ अत्यन्त अमानवीय व्यवहार करने की बात कही गई है। मंत्र हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं:-

उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ२ ।।ऽओषतात्तिग्महेते।
यो नोऽअरातिँसमिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।। - यजुर्वेद १३/१२

इसका अर्थ तहाफुज-ए-इंसानियत ने निम्न प्रकार दिया है-
ऐ राजपुरुष! आप धर्म के मुखालिफ दुश्मनों को आग में जला डालें। ऐ जाह व जलाल वाले पुरुष यह जो हमारे दुश्मनों को हौंसला देता है आप उसको उल्टा लटकाकर खुश्क लकड़ी की तरह जलाएँ। (यजुर्वेद १३/१२)
तहाफुज-ए-इंसानियत का दावा है कि उक्त उद्धृत भावार्थ महर्षि दयानन्द प्रणीत है।
यहाँ पर जैसा हमने पहले कहा इन्होंने अपनी मर्जी के अनुसार अपनी बात जैसे भी प्रमाणित हो, इस उद्देश्य से उक्त अर्थ को तोड़ मरोड़कर यहाँ दिया है। इससे पूर्व कि उक्त मन्त्र के महर्षि दयानन्द कृत अर्थ को यहाँ प्रस्तुत करें एक दो बात कहना चाहेंगे कि जैसा हमने इस आलेख की भूमिका में वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताया है, चारों वेदों में ऐसे बहुत से मंत्र हैं जिसमें राजा के कर्तव्यों का, प्रजा के कर्तव्यों का निदर्शन किया गया है। अतएव प्रथम तो यह भेद समझ लेना चाहिए कि यह मन्त्र राजा को निर्देश दे रहा है न कि जन सामान्य को। जबकि पूर्व उद्धृत आयत में सभी ईमानवालों को निर्देश दिए जा रहे थे। यह बहुत बड़ा अन्तर है जो ध्यान में रखना चाहिए। अतः एक शासक को, एक राजा को अपनी प्रजा की, धर्मात्मा लोगों की, जो नैतिक मार्ग पर चलने वाले हैं उन लोगों की किस प्रकार रक्षा करनी चाहिए और उनके सुख का विस्तार करना चाहिए, तो साथ में ऐसे लोग जो अधर्मात्मा हैं, अर्थात् न्याय मार्ग पर नहीं चलते, लूट खसोट में विश्वास रखते हैं, उनको किस प्रकार से दण्ड देना चाहिए। इसी प्रकार बाहर के जो शत्रु हैं अर्थात् जो विदेशी शत्रु हैं उनके प्रति राजा किस प्रकार से व्यवहार करे, अपने राज्य की रक्षा करे और शत्रुओं को दण्ड प्रदान करे और यह भी कि जो हमारे शत्रुओं को उत्साहित करते हैं उनको भी दण्डित करना चाहिए, यह शिक्षा अनेक मंत्रों में है।
यहाँ रेखांकित करके हम तहाफुज-ए-इंसानियत से एक बात कहना चाहेंगे कि वेदों में जहाँ भी धर्म शब्द आता है वह किसी मत-मजहब तक संकुचित नहीं है। इस बात की गांठ बांध लेनी चाहिए। उक्त मंत्र में भी धर्मात्मा और धर्म के द्वेषी शब्दों का प्रयोग हुआ है और कहा गया है **'धार्मिकान् प्रत्यातनुष्व'** अर्थात् जो धर्मात्मा लोग हैं, हे राजन् उनके लिए सुखों का विस्तार कीजिए। इस पूरे पद को उल्लिखित अर्थ से पूरा का पूरा उड़ा दिया गया है। दूसरी ओर अन्य तथाकथित ईश्वरीय पुस्तकों में विभिन्न मज़हबों का स्पष्ट उल्लेख है तथा उनके मध्य पक्षपात भी स्पष्ट है। उदाहरणार्थ- हे ईमानवालो! तुम यहूदियों और ईसाइयों को मित्र न बनाओ। (६/५/५१)। उक्त मंत्र में आगे 'धर्म के द्वेषी शत्रुओं' के लिए जो कहा गया है उसको समझने के लिए यहाँ इस मंत्र में धर्म के अर्थ को समझने की आवश्यकता है। यहाँ 'धर्म' का अर्थ virtuous से है, अर्थात् जो नैतिकता में विश्वास करते हैं, जो सदाचारी हैं, ऐसे लोग। राजा का कर्तव्य है कि ऐसे लोगों की रक्षा करे उनके सुख का विस्तार करे। वैदिक दर्शन में जो धैर्यवान हो, जो क्षमाशील हो, जो चोरी न करता हो, जो पवित्र हो, जो जितेन्द्रिय हो, बुद्धिमान हो, विद्वान् हो, जो सत्याचरण करता हो, क्रोध रहित हो उसे धार्मिक कहा गया है। तो क्या शासक ऐसे लोगों का संवर्धन न करे? सबका उत्तर होगा अवश्य करे। धर्म की इस परिभाषा के अनुसार धर्म का द्वेषी कौन हुआ? जो अनैतिक कर्मों में लिप्त है, जो कदाचारी है अर्थात् चोर, डाकू, व्यभिचारी आदि हैं, उनके लिए कहा गया है कि इनको निरन्तर जलाइये अर्थात् उन्हें दाह दीजिए, सन्ताप दीजिए। यह भी राजा का कर्तव्य ही है जनसामान्य को नहीं कहा गया है।

अब जहाँ भी 'जलाइये' शब्द आये या 'अग्नि के समान जलाने' की बात आये और हम कूदकर इस निष्कर्ष पर पहुँच जायें कि इसका अर्थ यह है कि उस मनुष्य को अग्नि में जला दिया जाये तो इससे बढ़कर कोई मूर्खता हो नहीं सकती। इसी मंत्र के अगले पद में ऐसे लोगों की बात कही गई है जो दिखावा तो तटस्थ होने का करते हैं परन्तु हमारे शत्रुओं को हर प्रकार से उकसाते हैं उन्हें उत्साह प्रदान करते हैं ताकि वे हमारे राष्ट्र का नुकसान करते रहें तो ऐसे शत्रुओं के लिए मंत्र में लिखा है कि उनको नीची दशा में करते हुए सूखे काष्ठ के समान जलाइये।

अब यहाँ पर तहाफुज-ए-इंसानियत ने या कहिए गाजी महमूद ने 'नीची दशा में करने' का मनमाना अर्थ निकाला है कि 'उल्टा लटकाकर', जबकि यहाँ प्रकरणानुकूल नीची दशा का अर्थ है उसे शर्मनाक स्थिति में लाकर खड़ा कर देना। आज के संदर्भ में अगर हम कहें तो कह सकते हैं कि उसके क्रियाकलापों को अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी के सामने लाकर शर्मनाक स्थिति में खड़ा कर देना। आज पाकिस्तान की क्या स्थिति हो रही है वह अत्यन्त शर्मनाक स्थिति में है भारत ने उसे नीची दशा में कर दिया है और सूखे काष्ठ के समान जलाने का अर्थ यह लेना कि अग्नि के ऊपर किसी को लटकाकर जला दिया जाये यह सब केवल मूर्खता है। अग्नि का एक गुण होता है दाह, दाह से होता है कष्ट। यहाँ अलंकार के आश्रय से यह बात कही गई है कि जिस प्रकार जलने पर दाह होता है पीड़ा होती है और पुनः आदमी ऐसे कर्म करने से विरत हो जाता है जिससे उसे दाह पहुँचे अथवा उसे तीव्र पीड़ा हो, उसी प्रकार का कठोर दण्ड उक्त प्रकार के अधार्मिक लोगों को, उक्त प्रकार के शत्रुओं को राजा देवे। इसका तहाफुज-ए-इंसानियत वाला तात्पर्य निकालने, समझने और समझाने वाले के लिए सुरक्षित रूप से यह कहा जा सकता है कि या तो वह वेदार्थ को समझा नहीं अथवा वह जान बूझकर कपटपूर्ण अर्थ प्रस्तुत कर रहा है क्योंकि ऋषि दयानन्द स्पष्ट लिख रहे हैं कि इस मंत्र में उपमा अलंकार है। देखिये संस्कृत में इसका भावार्थ देते हुए स्वामी जी लिखते हैं कि- **'राजादयः सभ्याः धर्मे विनये समाहिता भूत्वा जलमिव मित्रान् शीतयेयुः। अग्निरिव शत्रून् दहेयुः। य उदासीनः स्थित्वाऽस्माकं शत्रूनुत्पादयेत् तं दृढं बन्धं बध्वा निष्कण्टकं राज्यं कुर्य्युः।'**

भाषा में इसका अर्थ दिया है। 'इस मंत्र में उपमा अलंकार है- 'राजा आदि सभ्यजनों को चाहिए कि धर्म और विनय में समाहित होके जल के समान मित्रों को शीतल करें, अग्नि के समान शत्रुओं को जलावें। जो उदासीन होकर हमारे शत्रुओं को बढ़ावे उसको दृढ़ बन्धनों से बाँधकर निष्कंटक राज्य करे।' इस भाव को गाजी महमूद ने दिया ही नहीं।'

उक्त भावार्थ से स्पष्ट है कि जिस प्रकार जल के समान मित्रों को शीतल करने की बात कही है उसका अर्थ यह नहीं निकाला जा सकता कि मित्र को जल में डुबो दिया जाये। उसी प्रकार से अग्नि के समान शत्रुओं को जलावें का अर्थ यह नहीं है कि शत्रुओं को आग के अन्दर जला दिया जाये बल्कि वही है जो हमने ऊपर लिखा है।

यहाँ इस वेदमंत्र के महर्षि दयानन्दकृत भाष्य में क्रूरता और अमानवीयता उसी को दिख सकती है जिसने विशेष रूप से देखने के लिए विशेष रूप का चश्मा लगा रखा है। अन्यथा यहाँ प्रकरण को समझने की आवश्यकता है कि यहाँ राजधर्म की बात की गई है। तो जो शासक है, क्या उसका ठीक-ठीक कर्तव्य नहीं है कि अच्छे, धर्मात्मा लोगों की रक्षा करे तथा दुष्टों को दण्ड दे? क्या जो लोग डाकू लुटेरे व्यभिचारी हैं उनको छोड़ देना चाहिए ताकि वे निरन्तर उपद्रव करते रहें? पुनः स्मरण रखें कि ये दण्ड देने का जो अधिकार यहाँ दिया गया है वह केवल राजा को दिया है हर किसी को नहीं। इसकी उन शिक्षाओं से तुलना नहीं करनी चाहिए कि जो भी हमारे मन्तव्यों को न मानें उनको तलवार की धार से समाप्त कर देना चाहिए। वह शिक्षा (या कुशिक्षा) तो विशेष मजहब मानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को दी गई है कि जो भी आपकी विचारधारा के विपरीत विचार रखता है उसको मार दीजिए।

वैदिक संस्कृति में विपरीत विचारधारा वाले व्यक्ति को मारा नहीं जाता है, उससे विचार विनिमय किया जाता है, शास्त्रार्थ किया जाता है। फिर जो सत्य का प्रकाश होता है उसे ग्रहण किया जाता है। आप आर्यावर्त्त का इतिहास उठाकर देखिए सर्वत्र यही पद्धति आपको मिलेगी। स्वयं ऋषि दयानन्द ने सैंकड़ों शास्त्रार्थ किए।

हमारा तात्पर्य यही है कि कपट करके तथ्यों को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत करना बन्द कीजिए। वेद की शिक्षाओं की छाँव में अपने जीवन का निर्माण कीजिए और ऐसे समरस समाज की संरचना कीजिए कि जिसमें मनुष्य-मनुष्य से तो क्या पशु-पक्षी प्राणियों और स्थावरों के प्रति भी द्वेष भाव न रखें स्नेह व प्रेम के भाव रखें। आशा है सही परिपेक्ष्य में ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को हृदयंगम करने का श्रम करेंगे।

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये।। अथर्ववेद १९/६२/१

अर्थात् जैसे परमेश्वर सब ब्राह्मण आदि से निष्पक्ष होकर प्रीति करता है, वैसे ही विद्वानों को सब संसार से प्रीति करनी चाहिए।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

२९ सितम्बर की कालरात्रि

२९ सितम्बर की रात्रि एक कालरात्रि थी जिसमें भारतवर्ष के सौभाग्य सूर्य की आभा को सदैव के लिए निस्तेज करने का कुचक्र सफलीभूत हुआ। तिल तिल जलकर लाखों दीपों को जलाने वाले दीपक को ही बुझा दिया। कारण? अंधेरे को ही अपना स्वर्ग मानने वाले उल्लू और चमगादड़ों को सूर्य की प्रखर किरणें कब अच्छी लग सकती थीं? विषयानन्द में रमने वालों को दर्पण दिखाने वाले हाथ कब सह्य हो सकते थे। अविद्या के गर्त में पड़े आत्ममुग्धों को सत्य की स्वर लहरियाँ कब झंकृत कर सकती थीं? तो अंधेरे ने साजिश कर ली रोशनी को बुझाने की। फिर एक बार गद्दारों ने भारत की तकदीर पर वार किया और देश को विश्वगुरु के पद पर आसीन कराने का भागीरथ प्रयत्न करने वाले महामना को मिटाने के लिए विश्वास ने फिर एक बार घात कर दिया।

महर्षि दयानन्द जिन दिनों उदयपुर में प्रवास कर रहे थे, उस समय ही जोधपुर आने का निमंत्रण उन्हें प्राप्त हुआ था। वे यहाँ से शाहपुरा गये, वहाँ से उन्होंने जोधपुर जाने का मन बनाया था। शाहपुराधीश जोधपुर के वातावरण से भली-भाँति परिचित थे। अतः वे नहीं चाहते थे कि स्वामी जी वहाँ जायें परन्तु उनकी भी सीमा थी। वे स्वामी जी को रोक तो नहीं सकते थे परन्तु थोड़ा सा चेताने की दृष्टि से बड़े झिझकते हुए उन्होंने श्री महाराज से कहा 'आप मूलासुर के देश में न जाइये।' फिर आगे कहा-'जहाँ आप जा रहे हैं वहाँ वेश्याओं का अधिक खण्डन न कीजिए।' इस पर स्वामी जी ने जो उत्तर दिया वो उनके स्वभाव के अनुकूल ही था- 'मैं बड़े-बड़े कटीले वृक्षों को नहुरने से नहीं काटा करता इनके लिए तो अति तीक्ष्ण शस्त्रों की आवश्यकता होगी।' शाहपुरा से श्री महाराज अजमेर पहुँचे। अजमेर में भी लोगों को जोधपुर के वातावरण को लेकर अत्यन्त शंका थी। उन्होंने भी स्वामी जी की सेवा में वहाँ न जाने की प्रार्थना की और कहा- 'भगवन्! वह मूल राक्षस का देश है। वहाँ न जाइये।' परन्तु महाराज धुन के धनी थे। यहाँ भी उन्होंने यही कहा- 'यदि लोग हमारी अंगुलियों की बत्तियाँ बनाकर जला दें तो भी कोई चिन्ता नहीं मैं वहाँ जाकर अवश्य ही सत्योपदेश करूँगा।' आगे चलकर विष देने की घटना के बाद डॉ. सूरजमल ने भी स्वामी जी को कहा था कि आप इस राक्षस भूमि में आये ही क्यों? इन सब बातों से स्पष्ट है कि जहाँ जोधपुर के शासक की वेश्यागमन आदि में तीव्र रुचि लोगों को दूर-दूर तक ज्ञात थी, वहीं जोधपुर निवासियों को लेकर के भी उनकी अच्छी राय नहीं थी। आज ऐसा लगता है कि काश स्वामी जी उनकी बात मान लेते तो भारतवर्ष का परिदृश्य ही बदला हुआ होता। अगर जोधपुर में स्वामी जी के प्राणों पर तीव्र वार नहीं होता तो ब्रह्मचर्य की आभा से उद्दीप्त, आदित्य अखण्ड ब्रह्मचर्य से निर्मित शरीर का पतन १०० वर्ष से पूर्व तो कदापि न होता।

स्वामी जी महाराज को भी वहाँ जाने पर यह प्रतीत होने लगा था कि यहाँ के लोगों के बारे में जो कुछ कहा गया वह सत्य ही है। वहाँ के लोग खुशामदी थे। सम्मुख में तो हुकुम-हुकुम करते थे पर पीछे से हँसी उड़ाते थे। इस बीच वेश्या नन्ही भगतन नाराज हुई। फैजुल्ला खाँ आदि मुसलमान नाराज हुए। राव राजा तेजसिंह जी को छोड़ दिया जाए तो तत्समय में महाराजा जसवन्तसिंह जी व प्रतापसिंह जी की कोई सकारात्मक भूमिका नहीं रही। महाराजा जसवन्त सिंह तो २७ दिन बाद स्वामी जी के दर्शन हेतु आए।

जोधपुर में इतना कुछ घटा, पूरा षड्यंत्र रचा गया और भारत से उसका मुकद्दर छीन लिया गया, तब भी इस पूरी घटना के लिए जिम्मेदार अपराधी को राज्य प्रशासन द्वारा पकड़ न पाना और किसी को भी सजा न दिया जाना कुछ इशारा तो करता ही है। यही नहीं एक दशक पश्चात् भी नन्हीं भगतन का जसवन्तसिंह जी पर अत्यन्त प्रभाव बना रहना यह बताता है कि जोधपुर के शासक में सहृदयता की भी अत्यन्त कमी थी।

२९ सितम्बर १८८३ की रात्रि को श्री महाराज को विष दिया गया। उससे दो-तीन दिन पूर्व २५ व २६ सितम्बर की रात्रि को (१२ सितम्बर- डॉ. भारतीय) स्वामी जी के साथ जो कल्लू नाम का कहार था, वह खिड़की के रास्ते स्वामी जी के कमरे में गया और कुछ मोहरें, कुछ रुपये इत्यादि चुराकर भाग गया। स्वामी जी उन दिनों सभी खिड़कियाँ खुली छोड़कर सोया करते थे और ब्रह्मचारी रामानन्द को यह आदेश था कि वह खिड़की के पास सोया करे। क्या संयोग था कि उस दिन रामानन्द जी भी वहाँ नहीं सोये। अगले दिन पुलिस में रिपोर्ट हुई कर्नल मह्यूद्दीन खाँ कोतवाल था। उसने महाराज से कहा कि आपको किस पर संदेह है। श्री महाराज ने कुछ नहीं कहा। परन्तु कल्लू

गायब था तो स्पष्ट था कि चोरी उसी ने की थी। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि जोधपुर के उक्त कोतवाल साहब कल्लू का अनुसंधान नहीं कर पाये। जीवनी लेखकों का विचार है कि पुलिस वालों ने दिखावे मात्र के लिए ही अनुसंधान किया था। यहाँ एक बात और है कि उक्त कोतवाल ने कल्लू को ढूढ़ने पर कितना ध्यान दिया होगा वह तो पता नहीं, परन्तु ब्रह्मचारी रामानन्द को हवालात में डालने का भरपूर प्रयास किया। परन्तु स्वामी जी ने कठोरता के साथ इसका निषेध किया।

ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी ने सितम्बर के अंतिम सप्ताह में निश्चित रूप से जोधपुर छोड़ने का निश्चय कर लिया था और इसमें जो भी देरी हो रही थी वह जोधपुर राज्य की ओर से स्वामी जी की यात्रा का इंतजाम करने में हो रही ढिलाई की वजह से हो रही थी। स्वामी जी ने २६ सितम्बर १८८३ को राव राजा तेजसिंह जी को जो पत्र लिखा उसमें स्पष्ट लिखा था- 'अब तक सवारी का आपने क्या प्रबन्ध किया? इसका हाल मैंने अब तक कुछ भी नहीं पाया।' इसी पत्र में स्वामी जी ने आगे लिखा- 'इसी प्रकार का पत्र मैंने आपके पास परसों भेजा था (अर्थात् २७ सितम्बर) और तीन पत्र गत रविवार के दिन जिनको आज सात दिन हुए, अमरदान के हाथ भेजे थे वे भी पहुँचे होंगे, जिनमें से एक श्रीमान् जोधपुराधीश, दूसरा महाराज प्रतापसिंह जी और तीसरा आपके पास।' इसी पत्र में स्वामी जी पुनः लिखते हैं 'परसों यहाँ से यात्रा अवश्य होगी।' उक्त पत्र में उल्लिखित बिन्दुओं से यह स्पष्ट है कि स्वामी जी उस सप्ताह में जोधपुर छोड़ने का निश्चय कर चुके थे सवारी इत्यादि की व्यवस्था में ढील होने के कारण रवानगी नहीं हो पाई तो उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि अधिकतम १ अक्टूबर को वे जोधपुर अवश्य छोड़ देंगे।

क्या यह केवल संयोग है कि २६ सितम्बर को स्वामी जी दृढ़ता से लिखते हैं कि वे अधिकतम १ अक्टूबर को जोधपुर छोड़ देंगे और २६ सितम्बर को ही उन्हें विष दे दिया जाता है? यहाँ एकदम स्पष्ट है कि षड्यंत्रकारियों का गिरोह नहीं चाहता था कि स्वामी जी जोधपुर से जीवित अवस्था में लौटें। सन्देह यहाँ यह भी होता है कि कल्लू कहार ने जो २५ अथवा २६ की रात्रि को स्वामी जी के कमरे से चोरी की, कहीं वह भी तो स्वामी जी का अन्त करने की दृष्टि से नहीं गया था और कुछ भय प्रतीत होने पर स्वामी जी का घात न करके केवल चोरी करके ही भाग गया? अब जब षड्यंत्रकारियों को कल्लू के नाकाम रहने की बात पता थी (एक सम्भावना) और स्वामी जी के १ अक्टूबर तक जोधपुर से जाने की बात पता थी तो २६ सितम्बर की रात्रि को ही स्वामी जी को विष दे दिया गया। उसके बाद तो जोधपुर में कराई गई उनकी चिकित्सा के क्रम में, जोधपुर से आबू भेजने के क्रम में, आबू के अंग्रेज अधिकारी द्वारा डॉक्टर लक्ष्मणदास को तुरन्त अजमेर जाकर अपनी ड्यूटी के निर्देश देने के क्रम में, तथ्यों की एक लम्बी शृंखला हमारे समक्ष आती है जिसकी वजह से यह स्पष्ट होता है कि पदे-पदे ऐसे षड्यंत्र न होते तो विषपान के पश्चात् भी स्वामी जी का जीवन बच सकता था। परन्तु उस देवता की जीवन लीला समाप्त करने में अनेक लोग संलग्न थे। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि तृतीय श्रेणी के डॉक्टर अली मर्दान खाँ से उनका इलाज कराया गया। और १६ अक्टूबर तक भी कभी ऐसा क्षण नहीं आया जब तबीयत में तनिक भी सुधार हुआ हो। ऐसे में जोधपुर के प्रतिष्ठित डॉक्टर रोडम्स अथवा डॉ. नवीनचन्द्र गुप्त से सलाह क्यों नहीं ली गई? आबू में डॉ. लक्ष्मणदास के इलाज से जब लाभ हो रहा था तब क्यों अंग्रेज सर्जन ने उन्हें तुरन्त अजमेर जाने को कहा यहाँ तक कि उनका त्यागपत्र तक अस्वीकार कर दिया? पर यहाँ फिर वही बात है जो स्वामी जी ने अंतिम समय में कही कि- 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो।' इसे विधि का विधान समझने के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है। विश्व मानवता की यह अमूल्य धरोहर उससे विलग होनी थी। संभवतः यही ईश्वर को मंजूर था, पर फिर भी दिल में एक कसक रह जाती है कि काश स्वामी जी ....।

- अशोक आर्य (सम्पादक- सत्यार्थ सौरभ)
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के द्वारा निर्मित आर्ट चित्र गैलेरी में महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के संन्यासियों तथा आर्य समाज के विचारधारा से प्रभावित होकर देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले महान् पुरुषों, अमर शहीदों व महर्षि की चित्रावली बहुत प्रभावकारी है। आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देने वाली है। मैं न्यास के इस कार्य की हृदय से प्रशंसा करता हूँ।

- डॉ. संदीपन आर्य, एसोसिएट प्रोफेसर

सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर द्वारा स्थापित यह चित्रावली महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित्र दर्शाती है। यह समझने में बहुत आसान है, सुन्दर है। यह मन को लुभाती है और देशभक्ति और वैदिक धर्म के विषय में प्रेरणा मिलती है।

- आर्य निमेष, आकोट, महाराष्ट्र ९८२२७७५६८१

लोकतंत्र एक व्यवस्था ही नहीं संस्कृति भी साझा व सार्थक संवाद से मजबूत बनेगा लोकतंत्र

देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू इलाहाबाद के कुम्भ मेले में घूम रहे थे। उनके चारों तरफ लोग जय-जयकारे लगाते चल रहे थे। गाँधी जी के राजनैतिक उत्तराधिकारी एवं विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र के मुखिया को देखने हेतु भीड़ उमड़ पड़ी थी। अचानक एक बूढ़ी औरत भीड़ को तेजी से चीरती हुयी नेहरू के समक्ष आ खड़ी हुयी- 'नेहरू! तू कहता है देश आजाद हो गया है, क्योंकि तू बड़ी-बड़ी गाड़ियों के काफिले में चलने लगा है। पर मैं कैसे मानूँ कि देश आजाद हो गया है? मेरा बेटा अंग्रेजों के समय में भी बेरोजगार था और आज भी है, फिर आजादी का फायदा क्या? मैं कैसे मानूँ कि आजादी के बाद हमारा शासन स्थापित हो गया है।' नेहरू अपने चिरपरिचित अन्दाज में मुस्कुराये और बोले- 'माता! आज तुम अपने देश के मुखिया को बीच रास्ते में रोककर और 'तू' कहकर बुला रही हो, क्या यह इस बात का परिचायक नहीं है कि देश आजाद हो गया है एवं जनता का शासन स्थापित हो गया है।' इतना कहकर नेहरू जी अपनी गाड़ी में बैठे और लोकतंत्र के पहरूओं का काफिला उस बूढ़ी औरत के शरीर पर धूल उड़ाता चला गया।

लोकतंत्र की यही विडंबना है कि हम नेहरू अर्थात् लोकतंत्र के पहरूए एवं बूढ़ी औरत अर्थात् जनता दोनों में से किसी को भी गलत नहीं कह सकते। दोनों ही अपनी जगहों पर सही हैं, अन्तर मात्र दृष्टिकोण का है। गरीब व भूखे व्यक्ति हेतु लोकतंत्र का वजूद रोटी के एक टुकड़े में छुपा हुआ है तो अमीर व्यक्ति हेतु लोकतंत्र का वजूद चुनावों में अपनी सीट सुनिश्चित करने और अंततः मंत्री या किसी अन्य प्रतिष्ठित संस्था की चेयरमैनशिप पाने में है। यह एक सच्चाई है कि दोनों ही अपने वजूद को पाने हेतु कुछ भी कर सकते हैं। भूखा और बेरोजगार व्यक्ति रोटी न पाने पर चोरी की राह पकड़ सकता है या समाज के दुश्मनों की सोहबत में आकर आतंकवादी भी बन सकता है। इसी प्रकार अमीर व्यक्ति धन-बल और भुजबल का प्रयोग करके चुनावों में अपनी जीत सुनिश्चित कर सकता है। यह दोनों ही लोकतंत्र के दो विपरीत लेकिन कटु सत्य हैं। परन्तु इन दोनों कटु सत्यों के बीच लोकतंत्र कहाँ है, संभवतः एक राजनीति शास्त्री या समाज शास्त्री भी व्याख्या करने में अपने को अक्षम पायें।

लोकतंत्र विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय शासन प्रणाली है। लोकतंत्र का अर्थ किसी देश के सामान्य जन की सत्ता के नीति निर्धारण में भागीदारी है। मतदान के माध्यम से इस भागीदारी को मूर्त रूप देना होगा। मतदान से बड़ा कोई दान नहीं। अंगदान, रक्तदान, धनदान, विद्यादान, भूदान से परे लोकतंत्र में मतदान एक ऐसा महान् दान है जिससे हमारा वर्तमान व भविष्य दोनों सुधर जाते हैं। देश में जब शिक्षा का प्रतिशत ३० से ३५ प्रतिशत था तब ४५ से ६८ फीसदी वोट पड़ते थे। आज शिक्षा का प्रतिशत ६० से ८० प्रतिशत है तब मतदान ६५ प्रतिशत से ज्यादा नहीं होता। शिक्षा के विकास के साथ जागरूकता और राजनीतिक चेतना का जो विकास होना चाहिए था वह

नहीं हुआ।

लोकतंत्र की सबसे बड़ी विशेषता सम्प्रभुता का जनता के हाथों में होना है। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने कहा था- 'जनता का, जनता के लिये, जनता द्वारा शासन ही लोकतंत्र है।' जनता ही चुनावों द्वारा तय करती है कि किन लोगों को अपने ऊपर शासन करने का अधिकार दिया जाय। कुछ देशों ने तो इसी आधार पर जनता को अपने प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का भी अधिकार दिया है। यह एक अलग तथ्य है कि आज राजनीतिक दल ही यह निर्धारित करते हैं कि जनता का प्रतिनिधित्व करने की जिम्मेदारी किसे सौंपी जाय। लोकतंत्र में प्रतिनिधित्व की इस अजूबी व्यवस्था के कारण ही नाजीवादी हिटलर एवं मुसोलिनी ने इसे 'भेड़ तंत्र' कहा। उनका मानना था कि- 'लोकतंत्र वास्तविक रूप में एक छुपी हुयी तानाशाही है, जिसमें कुछ व्यक्ति विशेषजन संप्रभुता की आड़ में यह सुनिश्चित करते हैं कि जनता को किस दिशा में जाना है न कि जनता यह निर्धारित करती है कि उसे किस ओर जाना है।' इसी कारण उन्होंने लोकतंत्र की जनता को 'भेड़' कहा, जिसे डण्डे के जोर पर जिस ओर हांक दो वह चली जायेगी। पर वक्त के साथ इसे उचित नहीं ठहराया जा सकता।

आज लोकतंत्र मात्र एक शासन-प्रणाली नहीं वरन् वैचारिक स्वतंत्रता का पर्याय बन गया है। चाहे वह संयुक्त राष्ट्र संघ का 'मानवाधिकार घोषणा पत्र' हो अथवा भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त मूलाधिकार हों, ये सभी राज्य के विरुद्ध व्यक्ति की गरिमा की स्वतंत्रता सुनिचित करते हैं। यह लोकतंत्र का ही कमाल है कि वाशिंगटन में अमरीकी राष्ट्रपति के मुख्यालय व्हाइट हाउस के सामने स्पेनिश मूल की वृद्ध महिला कोंचिता ने पिछले तीन दशकों से अपनी प्लास्टिक की झोपड़पट्टी लगा रखी है। व्हाइट हाउस और अमेरिकी नीतियों की कट्टर विरोधी कोंचिता को कोई भी वहाँ से हटाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है क्योंकि वह 'फ्रीडम ऑफ स्पीच' की प्रतीक बन गई है। राष्ट्रपति रीगन के जमाने में

व्हाइट हाउस की बाहरी दीवार से लगा उसका ठिकाना थोड़ा दूर ठेल दिया गया क्योंकि यह रीगन की पत्नी को रास नहीं आया पर आज भी लोगों के लिए व्हाइट हाउस के सामने बसी यह बरसाती आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। (अब इनका निधन हो चुका है।)

वस्तुतः लोकतंत्र मात्र चुनावों द्वारा स्थापित राजनीतिक प्रणाली तक ही सीमित नहीं है बल्कि सामाजिक लोकतंत्र, आर्थिक लोकतंत्र जैसे भी इसके कई रूप हैं। समाज में जनतंत्र से पहले हमें अपने बीच, अपने परिवार में जनतंत्र कायम करना चाहिए। परिवार में जनतंत्र होगा तो समाज में जनतंत्र अपने आप आ जाएगा। यह जरूरी नहीं कि राजनैतिक रूप से घोषित लोकतंत्रात्मक प्रणाली में वास्तविक रूप में सामाजिक एवं आर्थिक लोकतंत्र कायम ही हो। इसी विरोधाभास के चलते 'सामाजिक न्याय' एवं 'समाजवादी समाज' की अवधारणाओं ने जन्म लिया। भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो यहाँ पर एक लम्बे समय से छुआछूत की भावना रही है-स्त्रियों को पुरुषों की तुलना में कमजोर समझा गया है, कुछ जातियों को नीची निगाहों से देखा जाता है, धर्म के आधार पर बँटवारे रहे हैं। निश्चिततः यह लोकंतत्र की भावना के विपरीत है। लोकतंत्र एक वर्ग विशेष नहीं, वरन् सभी की प्रगति की बात करता है। तराजू के दो पलड़ों की भांति जब तक स्त्री को पुरुष की बराबरी में नहीं खड़ा किया जाता, तब तक लोकतंत्र के वास्तविक मर्म को नहीं समझा जा सकता। भारतीय संविधान में ७३वें संशोधन द्वारा पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण देना एवं संसद में 'महिला आरक्षण विधेयक' का रखा जाना इसी दिशा में एक कदम है। यह एक कटु सत्य है कि तमाम विकसित देशों में प्रारम्भिक अवस्थाओं में महिलाओं को मताधिकार के योग्य नहीं समझा गया। क्या महिलायें लोकतंत्र का हिस्सा नहीं हैं ? इसी प्रकार समाज के पिछड़े वर्गों को आरक्षण देकर अन्य वर्गों के बराबर लाने का प्रयास किया गया है।

लोकतंत्र जनता का शासन है, पर इन दिनों यह बहुमत का शासन होता जा रहा है। यह सत्य है कि बहुमत ज्यादा से ज्यादा लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, पर इसकी आड़ में अल्पमत के अच्छे विचारों को नहीं दबाया जा सकता। भारत विविधताओं में एकता वाला देश है। जाति, धर्म, भाषा, बोली, त्यौहार, पहनावा, खान-पान सभी कुछ में विविधता है, ऐसे में लोकतंत्र बहुमत की मनमर्जी नहीं वरन् बहुमत या अल्पमत दोनों के अच्छे विचारों की मर्जी है। इन विचारों की रक्षा करने हेतु ही विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका

और प्रेस को लोकतंत्र के चार स्तम्भों के रूप में खड़ा किया गया है। लोकतंत्र के चारों स्तम्भों में संतुलन का सिद्धान्त है। एक कमजोर होता है तो दूसरा मजबूत होता जाता है। विधायिका अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पाती है तो 'न्यायिक सक्रियतावाद' के रूप में न्यायपालिका उन्हें निभाने लगती है, कार्यपालिका संविधान के विरुद्ध जाने की कोशिश करती है तो न्यायालय एवं यदि जनभावनाओं के विरुद्ध जाती है तो प्रेस उसे सही रास्ता पकड़ने पर मजबूर कर देता है। निश्चिततः यह अभिनव सन्तुलन ही लोकतंत्र को अन्य शासन प्रणालियों से अलग करता है। लोकतंत्र में प्राप्त स्वतंत्रताओं का कुछ लोग थोड़े समय के लिये दुरुपयोग कर सकते हैं, पर एक लम्बे समय तक नहीं क्योंकि यह लोकतंत्र है। जनता हर गतिविधि को ध्यान से देखती है, पर बर्दाश्त से बाहर हो जाने पर वह व्यवस्थायें भी बदल देती है। यह भी लोकतंत्र का एक कटु सत्य है।

लोकतंत्र एक व्यवस्था ही नहीं एक संस्कृति भी है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में वास्तविक लोकतांत्रिक सत्ताएँ तभी सृजित हो जाती हैं, जब समाज लोकतांत्रिक हो। जनजीवन में लोकमत और मत-विवेक विकसित हो। लोकतंत्र एक संरचना है, जो सार्थक व सहिष्णु प्रतिवाद व साझा संवाद से निर्मित होती है। नव्यतम तकनीक से निर्मित आज के विकसित संचार-तत्र के दौर में अगर हम लोकतंत्र में आचार और विचार की संस्कृति विकसित नहीं कर सकते तो इस लोकतंत्र का स्तर एकदम बाजारू हो जाएगा। दुनिया में जिन देशों में लोकतंत्र दो सौ या पाँच सौ साल से जीवित है, उसका कारण भी यही है कि लोकतंत्र हर स्तर पर आचार-विचार की संस्कृति बन चुका है। लोकतंत्र में व्यवस्था बड़ी और व्यक्ति छोटा होता है, इस बात को गंभीरता से समझना होगा। हर व्यवस्था के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष होते हैं, सो लोकतंत्र के भी हैं। वस्तुतः २१वीं शताब्दी में लोकतंत्र सिर्फ एक राजनैतिक नियम, शासन की विधि या समाज का ढांचा मात्र नहीं है बल्कि यह समाज के उस ढांचे की खोज करने का प्रयत्न है, जिसके अन्तर्गत सामान्य मूल्यों के द्वारा स्वतंत्र व स्वैच्छिक वृद्धि के आधार पर समाज में एकरूपता और एकीकरण लाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

- कृष्ण कुमार यादव
निदेशक डाक सेवाएँ
लखनऊ (मुख्यालय) परिक्षेत्र,
उत्तर प्रदेश-२२६००१
चलभाष- ०९४१३६६६५९९,

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

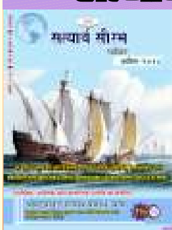

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

हमें हर हाल में गलत बीज बीजने बन्द करने होंगे

सीताराम गुप्ता

पंजाबी भाषा के रचनाकार डॉ. श्यामसुन्दर दीप्ति की एक लघुकथा 'बीज' पढ़ रहा था। कश्मीर सिंह अपने दोस्त सुरजन सिंह के साथ अपने बेटे दिलदार का, जिसकी एक अच्छे सरकारी पद पर नियुक्ति हुई है और जो अपने कॉलेज का बैस्ट एथलीट रहा है, मेडिकल करवाने सिविल सर्जन के दफ्तर पहुँचता है। जाँच के बाद डॉक्टर ने बताया कि दिलदार का ब्लडप्रैशर ज्यादा है। इस बात पर कश्मीर सिंह को गुस्सा आ जाता है। इस पर उसका दोस्त सुरजन सिंह कहता है, 'चल छोड़। ये इस तरह ही करते हैं। पाँच सौ रुपए माँगता होगा और क्या? मार मुँह पर।' सुरजन सिंह के ये कहने पर कश्मीर सिंह कहता है, 'पाँच-चार सौ की बात नहीं सुरजन मियाँ। बात यह है कि इसने दिलदार के दिल में बीज गलत बीज दिया है और कुछ नहीं।' लघुकथा में कश्मीर सिंह का कथन बहुत महत्त्वपूर्ण है। आज जिधर नजर डालिए गलत बीज बीजे जाते मिल जाएँगे।

ये गलत बीज ही ईमानदारी और नैतिकता की राह में सबसे बड़ी रुकावट हैं। ये गलत बीज ही बढ़ते हुए भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण हैं। जब हमारे साथ बार-बार ऐसा होता है तो मन में यही ख्याल आता है कि क्यों न हम भी ऐसा ही करें? अधिकांश युवक जब अपने कार्यक्षेत्र में पदार्पण करते हैं तो उनके मन में अपने कार्य करने के क्षेत्र में अच्छे से अच्छा करने का उत्साह होता है। साथ ही अनेक युवक ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के साथ-साथ हर जगह व्याप्त भ्रष्टाचार मिटाने के संकल्प के साथ नौकरी अथवा सेवा के क्षेत्र में आते हैं लेकिन उपरोक्त गलत बीजों के बीजे जाने के कारण उनके उत्साह व संकल्प धरे के धरे रह जाते हैं। अन्ततोगत्वा वे भी गलत बीज बीजने के काम में लग जाते हैं।

शिक्षा का मनुष्य के जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस की शुरुआत भी प्रायः गलत बीज बीजने से होती है। सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद अधिकांश अच्छे स्कूलों में मोटे डोनेशन के बिना दाखिला नहीं मिलता। यही कारण है कि हम अपने बच्चों को एक अच्छा इंसान बनाने की बजाय एक बड़ा आदमी बनाने को विवश हैं। और बड़ा आदमी बनाने के लिए चाहे जो करना पड़े। चाहे जैसे बीज बीजने पड़ें। लेकिन ये वास्तविकता है कि हर बच्चे को पता होता है कि उसके दाखिले के लिए कितनी रिश्वत दी गई। स्कूलों में किस तरह से अभिभावकों और शिक्षकों से चीटिंग की जाती है। शिक्षक भी ईमानदारी से पढ़ाना चाहते हैं लेकिन जब उनसे चालीस हजार पर दस्तखत करवाकर मात्र बारह-पन्द्रह हजार रुपए उनकी हथेली पर रख दिए जाते हैं तो इसका किसी पर भी अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

डॉक्टरी जैसे सम्मानित पेशे का व्यक्ति भी जब रिश्वत लेने

को विवश हो तो ये एक गम्भीर बात है लेकिन इसके मूल में गलत बीज बीजे जाने का ही असर है। बेशक डॉक्टरी की पढ़ाई बहुत अधिक श्रमसाध्य व व्ययसाध्य है और निजी मेडिकल कॉलेजों में प्रायः मोटा डोनेशन देने पर ही प्रवेश मिलता है लेकिन इसका ये अर्थ तो नहीं कि एक डॉक्टर गलत तरीकों से अपने मरीजों से पैसे ऐंठे। सरकारी अस्पतालों में आज भी अनेक ऐसे डॉक्टर हैं जो निस्स्वार्थ भाव से मरीजों का उपचार करते हैं। कई प्राइवेट डॉक्टर भी बहुत कम या नाममात्र की फीस लेकर रोगियों का उपचार करते हैं। तो ऐसे डॉक्टर बाकी डॉक्टरों के रोल मॉडल क्यों नहीं बनते? एक डॉक्टर द्वारा ईमानदारी से काम करने पर भी उचित आय और संतुष्टि मिलना मुश्किल नहीं।

आज जहाँ नजर डालिए गलत बीज ही बीजे जाते दिखलाई पड़ेंगे। तो क्या इस कारण से बाकी लोगों को अनैतिक होने अथवा भ्रष्ट आचरण करने की छूट दे दी जाए? कदापि नहीं। माना कि हमारे मार्ग में कुछ लोगों ने गलत बीज, बीज दिए लेकिन जिन लोगों ने हमारे मार्ग में सही बीज बीजे हमें वे क्यों नहीं दिखलाई पड़ते? हम उनकी तरह सिर्फ अच्छे बीज क्यों नहीं बीजते? आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने एक निबन्ध 'क्या निराश हुआ जाए?' में एक स्थान पर लिखते हैं, 'एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से दस के बजाय सौ रुपये का नोट दे दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकण्ड क्लास में डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, 'यह बहुत बड़ी गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।' उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

उपरोक्त घटना से कई चीजें स्पष्ट होती हैं जैसे हर दौर में अच्छे, ईमानदार और विनम्र व्यक्ति मौजूद होते हैं तथा जीवन में जब भी हम अच्छाई, ईमानदारी और विनम्रता आदि उदात्त गुणों का निर्वाह करते हैं तो इससे न केवल हमारे चेहरे पर संतुष्टि का भाव झलकने लगता है अपितु हमारे व्यक्तित्व में भी इसकी गरिमा दिखलाई पड़ने लगती है। अपने बीते हुए दिनों और घटनाओं पर थोड़ा दृष्टिपात कीजिए। आपने भी अपने जीवन में अवश्य ही अनेकानेक बार ऐसी ही अच्छाई, ईमानदारी, कर्त्तव्यपालन और विनम्रता आदि गुणों का परिचय दिया होगा। उस समय आपकी मनोदशा कैसी थी और उस मनोदशा का आपके स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ा था जरा याद करने की कोशिश कीजिए। जब भी हम ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं, किसी की मदद करते हैं अथवा अन्य कोई अच्छा कार्य करते हैं तो इससे न केवल हमारे चेहरे पर संतुष्टि का भाव झलकने लगता है और हमारा व्यक्तित्व गरिमापूर्ण दिखलाई पड़ने लगता है अपितु हमारे स्वास्थ्य में भी सकारात्मक परिवर्तन हो जाता है।

ईमानदारी मनुष्य का एक सर्वोत्तम गुण है। ईमानदारी का मनुष्य के व्यक्तित्व पर न केवल सकारात्मक प्रभाव पड़ता है

अपितु ईमानदार मनुष्य का स्वास्थ्य भी बेईमान लोगों के मुक़ाबले में बहुत अच्छा पाया जाता है। जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, किसी की सहायता करता है अथवा निस्स्वार्थ सेवा करता है उसे अत्यन्त संतुष्टि और आनन्द की प्राप्ति होती है। ईमानदारी की अवस्था में भी अत्यन्त संतुष्टि और आनन्द की प्राप्ति होती है। संतुष्टि और आनन्द की अवस्था में व्यक्ति तनावमुक्त होकर स्वस्थ हो जाता है। अतः ईमानदारी की अवस्था मनुष्य के अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत उपयोगी होती है। बेईमान व्यक्ति के चेहरे से जहाँ हमेशा धूर्तता टपकती रहती है वहीं ईमानदार व्यक्ति का चेहरा सदैव आत्मविश्वास की गरिमा से दमकता रहता है व प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण सबके आकर्षण का केन्द्र बन जाता है।

यह वास्तविकता है कि आज बहुत से लोग केवल उन क्षेत्रों में ही नौकरी करना चाहते हैं जहाँ ऊपर की कमाई भी हो और मोटी कमाई हो लेकिन मनुष्य और समाज के संतुलित विकास के लिए भ्रष्टाचार के इस दुश्चक्र को तोड़ना अनिवार्य है। इसका एक ही उपाय है और वो ये है कि हमारे मार्ग में जो गलत बीज बीजे गए हम उनको भूलकर केवल सही बीजे गए बीजों को याद रखें और केवल उनका अनुकरण करें।

- ए. डी.-१०६-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली- ११००३४
चलभाष- ०९५५५६२२३२३
Email: srgupta54@yahoo.co.in

विजयादशमी के सुअवसर पर

श्री राम प्रजा को सत्य से जीतते थे

वाल्मीकि रामायण से-

श्री राम प्रजा को सत्य से, दीनों को दान से, गुरुओं को सेवा से और युद्ध में शत्रुओं को धनुष के द्वारा जीतते थे। (अयोध्या काण्ड ११/१६)

राम का जाबालि को उपदेश-

१. ऋषि और विद्वान् लोग सत्य को ही उत्कृष्ट मानते हैं क्योंकि सत्यवादी पुरुष ही इस संसार में अक्षय मोक्ष सुख को प्राप्त करता है। (अयोध्या काण्ड ७७/१६)

२. मिथ्यावादी पुरुष से लोग वैसे ही डरते हैं जैसे सांप से। संसार में सत्य ही सबसे प्रधान धर्म माना गया है। स्वर्ग प्राप्ति का मूल साधन भी सत्य ही है। (अयोध्या काण्ड ७७/२०)

३. संसार में सत्य ही सुख-शान्ति एवं ऐश्वर्य का मूल है। संसार में सत्य से बढ़कर और कोई वस्तु नहीं है। (अयोध्या काण्ड ७७/२१)

४. राज्य, कीर्ति, यश और लक्ष्मी ही नहीं, अपितु स्वर्ग भी सत्यवादी पुरुष को ही प्राप्त होता है। अतः मनुष्य को सदा सत्य ही बोलना चाहिए। (अयोध्या काण्ड ७७/२६)

यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन च।
हन्यते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासदः।। (मनुस्मृति ८/१४)

अर्थ - जिस सभा में बैठे हुए सभासदों के सामने अधर्म से धर्म का और झूठ से सत्य का हनन होता है, उस सभा के सभासद मरे हुओं के समान ही हैं।

सत्यमेव जयते नानृतं, सत्येन पन्था विततो देवयानः। (मुण्डक उपनिषद्)

अर्थ - सत्य पक्ष की ही जीत होती है, झूठ की नहीं। सत्य के मार्ग पर चलकर ही मनुष्य देवता बनता है।

महर्षि मनु द्वारा लिखित मनुस्मृति के पाँचवें अध्याय का श्लोक है -

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।

अर्थ- (शुद्ध) पानी से शरीर शुद्ध होता है और मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है।

जो लोग समझते हैं कि किसी नदी या तालाब में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं और जो लोग व्यवहार में झूठ का सहारा लेते हैं उनके लिए महर्षि मनु का यह उपदेश है। सत्य आचरण का अर्थ है जैसा मन में हो वही बोले और उसके अनुसार ही काम करे। झूठ से तो मन मलिन ही होता है।

और भी-

नासौ धर्मो यत्र न सत्यम् अस्ति।
न तत् सत्यम् यत् छलेनाभ्युपेतम्।।
(महाभारत, उद्योगपर्व, विदुरनीति ३/५८)

अर्थ - जहाँ सत्य नहीं वहाँ धर्म नहीं और जिसमें छल-कपट है वह सत्य नहीं है।

वेद ने तो व्रत करने का ढंग भी यही बताया है कि सत्य का आचरण करने की प्रतिज्ञा करो।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। (यजुर्वेद १/५)

अर्थ- हे ज्ञानस्वरूप, सब व्रतों के पालक प्रभु! मैं यह व्रत करता हूँ कि असत्य के आचरण को छोड़कर सत्य का आचरण अपनाऊँ। आपकी कृपा से मेरा यह व्रत पूर्ण हो, सफल हो।

काश! हमारे राजनेता भी सत्य को अपनाते और जनता के सामने सत्य को ही परोसते।

- कृष्णचन्द्र गर्ग
८३१, सेक्टर- १०, पंचकूला, हरियाणा- १३४१०९
दूरभाष- ०१७२-४०१०६७९, kcg831@yahoo.com

रसातल

– त्रिभुवन

सत्य के लिए कभी किसी से न डरना, गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।

– हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में

'मनुष्य अपने कर्तव्य की आवाज को निर्विवाद नियम माने। अंतःकरण के आदेशों का पालन करे। भले वे उसके भौतिक हितों के जैसे पदोन्नति, वेतनवृद्धि, लाभदायी अंश आदि के विरुद्ध ही क्यों न हो! मनुष्य को इस लोक में अपने सदाचार के बदले पुरस्कार की कोई आशा नहीं करनी चाहिए।'

– इम्मानुएल कांट, 'मेटाफिजिक्स ऑव मॉरल्स' में

पोस्ट ट्रुथ एरा में सम्मोहक झूठों के सामने बौना होता सच और इस कालखण्ड को कुहनियों से ठेलते कुछ नैसर्गिक स्वर।

वे एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में शिक्षक हैं। डॉक्ट्रेट हैं। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर पीएचडी की है। वे कई बड़े नेताओं को अपनी सेवाओं से प्रभावित कर चुके हैं। वे अकसर मुझे ऐसे वाट्सऐप करते रहते हैं, जिनमें झूठ और साम्प्रदायिकता फैलाने के लिए आरएसएस को कोसा जाता है। मैं नहीं समझता कि जिन मेधावी लोगों को मैं जानता हूं, उनमें से वे किसी से कम बुद्धिमान होंगे।

यह घटना छह सितम्बर २०१८ की है। उस दिन जब देश में दलित आन्दोलन हुआ तो उन्होंने मुझे कुछ ऐसे फोटो भेजे, जिन्हें जोधपुर से लाइव बताया गया था। इनमें दलित युवक एक पुलिस अधिकारी को पीट रहे थे। एक चित्र में पुलिस अधिकारी जमीन पर गिरा पड़ा था और युवक उन पर लात जमा रहा था। उन्होंने इस चित्र के नीचे लिखाः सर, नाऊ ऐनफ. इज ऐनफ। ये एससी वालों ने हदें पार कर दी हैं। अब और बर्दाश्त नहीं होता! वे जिस फोटो के कारण उद्वेलित थे, वह झूठ था। वह सोशल मीडिया का एक पुराना फोटो था और शरारती तत्वों ने उसे दलितों के नाम से चला दिया।

मेरा मन्तव्य और मकसद न तो बन्द के दौरान हुई हिंसा पर कोई लीपापोती करना है और न ही किसी भी तरह के किसी आन्दोलन में हिंसा करने वालों के प्रति किसी भी प्रकार की सुहानुभूति जताना है। बात है खबर की सत्यता, वायरल होते झूठ और सच, उस पूरे सत्ता बाजार और सियासत के षड्यंत्र के पीछे की कहानी और एक सुनियोजित सुचिन्तित षड्यंत्र की, जिसने राष्ट्र की लोकचेतना और लोकनीति का

हरण कर लिया है।

पत्रकारिता का काम है बिना किसी प्रलोभन और बिना किसी भय के खबर देना। यह आईना भी है। इसमें समाज के विभिन्न तबके अपनी सूरत और सीरत देख सकते हैं। लेकिन लगता है कि अब इसे जंग लग गया है। हमारी पत्रकारिता में भी सब वही शिटस्टॉर्म उठ खड़ा हुआ है, जिसे हम राजनीति में बहुत साफ ढंग से पहचान लेते हैं और कई बार अपनी नाक पर रूमाल तक रखने को बेबस हो जाते हैं। हालांकि न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका और हमारे विश्वविद्यालयों में भी यही तूफान सम्मोहक, लेकिन विनाशकारी ढंग से मचल रहा है। अब इसकी दुर्गंध में भी एक सम्मोहन महसूस किया जा रहा है। अब हमारी पत्रकारिता से चार कदम आगे झूठ के हरकारे हैं। अगर एक विश्वविद्यालय का सुशिक्षित प्राध्यापक ऐसे झूठ का प्रसारक हो सकता है तो जो आम लोग अक्सर ऐसा कर बैठते हैं, उनका क्या कुसूर है?

लेकिन मेरी चिन्तायें मेरे अपने प्रोफेशन को लेकर भी हैं। हम हर सुबह जब अपनी चिन्दगी शुरु करते हैं और हमारे रिपोर्टर के रूप में हम जब खबरें डालना शुरू करते हैं, तब तक इस पोस्ट ट्रुथ ऐरा के निष्णात शिकारी अपने आशियानों से वायरल झूठ की इतनी मिट्टी उड़ा चुके होते हैं कि सच को लोग सच मानने को ही तैयार नहीं होते। और नतीजा ये निकलता है कि शिकारियों के सम्मोहक पिंजरों में सच छटपटाने लगता है और जब वह हताहत रूप में लोगों के सामने आता है, तब तक लोगों की मनःस्थिति ऐसी हो जाती है कि वह सच को सच स्वीकार ही नहीं कर पाते।

और यह वायरल झूठ आजकल इतना ताकतवर हो गया है

कि एकबारगी इसे सच भी देख ले तो इसे ही सच मान बैठे। इसका असर पत्रकारिता पर भी हुआ है। हर रोज वायरल किए जाने वाले झूठ ने पत्रकारिता जैसे पवित्र प्रोफेशन को ठिकाने सा लगा दिया है। ऐसे में पत्रकारिता को पुनर्जीवित करने की बहुत ही ज्यादा जरूरत आन पड़ी है।

चिंता की बात ये है कि पत्रकारिता में डेस्कटॉप की जगह धीरे-धीरे ट्रैश, स्पैम और रीसाइकिल बिन ने ले ली है। मीडिया का मुख्य काम विद्रूपताओं के सच का उत्खनन है, लेकिन उसे उसके मुख्य काम से हटाकर झूठ को साबित करने में लगा दिया गया है। मीडिया लैंडस्केप में कई नए ट्रेंड बहुत हतप्रभ करने वाले हैं। सोशल मीडिया में उफनते शिटस्टॉर्म ने मीडिया में विभ्रम फैलाने के कई नये डायमेंशन जोड़ दिए हैं। इसका एक अनुपम उदाहरण है टीवी चैनलों के समय को लीलता 'वायरल सच' कार्यक्रम।

अब वह समय गया, जब किसी पत्रकार को पीटा जाता था या किसी मीडिया समूह पर तरह तरह के दबाव बनाए जाते थे। अब लोग आपकी बुद्धि का ही हरण कर लेते हैं। उन्हें आपकी देह का अपहरण करने या उसे ठिकाने लगाने या कि उसे जेल में डालने की जरूरत ही नहीं।

अब सत्ता बंदूक की गोली से नहीं निकलती। अब सत्ता सोशल मीडिया के माध्यम से पैदा किए गए शिटस्टॉर्म से जन्म लेती है। अब आपकी मानसिकता को बदलने के लिए सम्मोहक ढंग से तैयार किए गए झूठ का बहुत सशक्त और प्रभावशाली नेटवर्क है। विवेकशील दर्शक और सोचकर

प्रतिक्रिया देने वाले श्रोता या पाठक नहीं। अब झूठ के ईको चैंबर हैं और उनमें बैठे झूठ के दक्ष नैरेटर हैं। कहीं कोई फिल्टर बबल नहीं है। बस पैसे, कारोबार, कार्पोरेशंस और पोस्ट ट्रुथ एरा की वर्चुअल शक्तियों के बल पर सिर्फ और सिर्फ वही एक पॉलिटिकल व्यूपाइंट सही है, जिसे ये कागज की नाव की तरह तैराना चाहते हैं बाकी सब देशद्रोह है, बाकी सब पॉलिटिकल व्यूपाइंट नफरत के काबिल हैं। यह झूठ इतना तीव्रतर वेग से हमारे सामने आ रहा है कि आप इसका एक प्रतिशत भी ड्रेन नहीं कर सकते।

मीडिया को किस तरह झूठ के झाल में फंसा दिया गया है, इसका उदाहरण वायरल सच है। झूठ गुफाओं से लेकर स्काईस्कैपर्स तक फैला दिया जाता है। ये लोग पहले एक सम्मोहक झूठ तैयार करते हैं। उसे सोशल मीडिया के माध्यम से पूरे देश में फैलाते हैं। पूरे नागरिक तंत्र में जब यह झूठ तारी हो जाता है तो टीवी चैनल के सबसे प्रतिभाशाली प्रोफेशनल लोग देश की पीड़ाओं को छोड़कर इस झूठ को झूठ साबित करने में जुटते हैं। वे अपनी स्टेट टीमों को इसमें लगाते हैं। वे टीमें झूठ को झूठ साबित करने के लिए डॉक्टरों, पुलिस अधिकारियों या ब्यूरोक्रैट्स का जरूरी समय खराब करते हैं और फिर झूठ को झूठ साबित करने की वाहवाही टीवी चैनल के लोग लुटते हैं। देश भर के दर्शक दिन भर एक झूठ को झूठ साबित हुआ मानकर अपना सिर हिलाते हैं।

ग्लोब्लाइजेशन के इस युग में मास डिस्ट्रक्शन के लिए अब शायद संहारक हथियारों की जरूरत ही नहीं रहेगी। हमारी आकांक्षाओं, हमारे सपनों और हमारी कल्पनाशीलताओं को लील रहा यह झूठ एक नई तरह का नर्व एजेंट है। लेकिन आज जितने भी झूठों और जितनी भी हिंसा को बारूदी सुरंगों की तरह बिछाया जा रहा है, उस सबके पीछे एक पॉलिटकल आइडियालॉजी है। आप जहां देखो, वहीं वॉयलेंस और ब्रूटैलिटी है। और हैरानी देखिए कि यही लोग आइडियल सोसाइटी के निर्माण की बातें करते हैं। आदिम युग की सोच को लेकर चल रहे इन लोगों की मैथॉडोलॉजी सोशल इनजस्टिस, इकोनॉमिक इनइक्वैलिटीज और विभिन्न संस्कृतियों के बीच सौहार्द की राहें रोकने वाली चीजों को दूर करने वालों को अप्रासंगिक साबित कर देने का मकसद लेकर चल रही है। ये जहाँ-जहाँ सत्ता में आए हैं, उन्होंने पूरे मैकेनिज्म को अपने हिसाब से कर लिया है। क्रमशः ....

- त्रिभुवन

मुख्य सम्पादक (दैनिक भास्कर, उदयपुर)

प्रथम ''विश्व आर्यरत्न'' पुरस्कार
पद्मभूषण महाशय आर्य धर्मपालजी गुलाटी को

भारत की सांस्कृतिक धरोहर व वैदिक धर्म के प्रति समर्पित, जीवन में परिश्रम, संघर्ष, सदाचार और परोपकार की साक्षात् मूर्ति, निर्धनों के पालक, देशप्रेम, शिक्षा, स्वास्थ्य और धर्मप्रचारार्थ वैदिक स्कूल, अस्पताल व गुरुकुलों की स्थापनार्थ, आर्य संस्थाओं के लिए सदैव अपना कोष खुला रखने वाले भामाशाह, महर्षि दयानन्द के सच्चे सिपाही पद्मभूषण महाशय को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर की ओर से प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जायगा। यह सम्मान इन्हें न्यास द्वारा २६ सित. से २ अक्टू. २०१९ तक न्यास परिसर में आयोजित १२६ वें 'ऋषि स्मृति सम्मेलन' में १ अक्टू. को प्रदान किया जाएगा। इस कार्यक्रम में आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान

विजयसिंह भाटी
कार्यकारी प्रधान

आर्य किशनलाल गहलोत
मंत्री

जयसिंह पालड़ी
कोषाध्यक्ष

न्यायदर्शनकार दुःख का लक्षण करते हुए लिखते हैं -

बाधनालक्षणं दुःखमिति। (न्यायदर्शन १/१/२१)

दुःख बन्धनस्वरुप है। स्वतंत्रता का न होना, अभिलाषाओं की पूर्त्ति न होना, जन्म-मरण के बन्धन में पड़ना दुःख है। प्रकृति के साथ सम्बन्ध आत्मा को बन्धन में इसीलिए डालता है कि उसके संयोग से बाधाओं में वृद्धि होती है। बांधना, पीड़ा, ताप, दुःख आदि शब्द इसी अर्थ को स्पष्ट करते हैं। इच्छा का व्याघात होने अथवा जिस वस्तु की इच्छा हो उसके न मिलने या अभीष्ट की सिद्धि न होने पर दुःख की अनुभूति होती है।

अनुकूलवेदनीयं सुखम्, प्रतिकूलवेदनीयं दुःखम्।

अनुकूल अनुभूति का होना सुख और प्रतिकूल अनुभूति का होना दुःख है।

इसी की मानो व्याख्या करते हुए महर्षि मनु लिखते हैं-

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद्विद्यात्समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः।। (मनु. ४/१६०)

क्योंकि जितना परवश होना है, वह सब दुःख और जितना स्वाधीन रहना है वह सब सुख कहाता है। यही संक्षेप में सुख और दुःख का लक्षण जानो।

परवशता में ही दुःख का अनुभव होता है। दुःख की स्थिति में मनुष्य कभी नहीं पड़ना चाहता। एक बार दुःख भोगकर सदा उससे बचना चाहता है। प्रतिकूलताओं को न आने देने अथवा उन्हें नष्ट कर देने की भावना जाग्रत होती है। यह प्रतिरोध या प्रतिकार की भावना व्यक्ति के चित्त को व्यथित कर कभी-कभी उसे अत्यन्त कुत्सित कार्य करने को उत्तेजित कर देती है। मनुष्य को चाहिए कि जो पराधीन कर्म हैं उनका प्रयत्न से त्याग कर दे और जो स्वाधीन कर्म हों, उनका सेवन प्रयत्न से करता रहे। जिस कर्म को करने से मनुष्य की आत्मा को सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता का अनुभव हो अर्थात् मन में भय, शंका, लज्जा का अनुभव न हो, उन कर्मों को प्रयत्नपूर्वक करे और जिनसे असन्तुष्टि एवं अप्रसन्नता हो उन कर्मों को त्याग देवे।

दुःख के प्रकार

दुःख के समस्त प्रकारों का तीन वर्ग में समावेश किया गया है- आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक।

आध्यात्मिक दुःख

इसके दो भेद हैं- मानसिक और शारीरिक। जो अपने आन्तरिक कारणों से उत्पन्न होते हैं- जैसे काम-क्रोध, लोभ-मोह, ईर्ष्या-द्वेष, घृणा, अज्ञान आदि मनोविकारों से उत्पन्न होनेवाले मानसिक दुःख हैं।

शरीर के वात-कफ-पित्त आदि की विषमता से उत्पन्न रोगादि से होनेवाले दुःख तथा भूख-प्यास, अतृप्त इच्छा आदि के कारण होने वाले शारीरिक दुःख हैं।

आधिभौतिक दुःख

यह वे दुःख होते हैं जो भौतिक पदार्थों तथा दूसरे प्राणियों के द्वारा प्राप्त होते हैं। जैसे राह चलते काँटा चुभना, सर्पदंश आदि।

आधिदैविक दुःख

प्रकृति से प्राप्त होनेवाला दुःख जैसे-आँधी, तूफान, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ज्वालामुखी आदि दैवीय आपदाओं के

कारण होनेवाले दुःख आधिदैविक दुःख कहाते हैं।

दुःखों का कारण

दुःख का कारण जीवात्मा तथा प्रकृति का संयोग होना है।

दुःख के कारण का वर्णन करते हुए योगसूत्रकार महर्षि पतंजलि लिखते हैं-

द्रष्टदृश्ययोः संयोगो हेयहेतुः। (योगदर्शन २/१७)

सूत्रार्थ- द्रष्टा (जीवात्मा पुरुष) तथा दृश्य (प्रकृति) से बने पदार्थों का संयोग होना ही दुःख का कारण है।

प्रकृति तथा इनके पदार्थों का संयोग होने पर जीवात्मा (मनुष्य) शुभाशुभ कर्म करता है, जिसका फल सुख दुःख के रुप में वह भोगता है। जब तक जीवात्मा पुरुष प्रकृति के साथ लिप्त रहता है तब तक बन्धन बना रहता है।

आचार्य पंचशिख ने अपने एक सन्दर्भ द्वारा इसी का प्रतिपादन किया है-

'तत्संयोगहेतुविवर्जनात् स्यादयमात्यन्तिको दुःप्रतीकारः।'

अविवेक के कारण उत्पन्न प्रकृति-पुरुष संयोग दुःख का कारण है। विवेक हो जाने पर जब दुःख का हेतु यह संयोग छूट जाता है, तब सांसारिक त्रिविध दुःख का आत्यन्तिक प्रतिकार हो जाता है।

दुःखों का कारण अविद्यादि क्लेश

महर्षि पतंजलि ने इस बन्धन का कारण अविद्या को बताया है-

तस्य हेतुरविद्या। (योगदर्शन २/२४)

अविद्यादि क्लेश ही दुष्कर्मों को करानेवाले तथा पुनः-पुनः जन्म-मरण कराने वाले होकर दुःखों का कारण बनते हैं। जब तक मनुष्य दुष्कर्म या पाप नहीं करता तब तक उसे दुःख प्राप्त नहीं होता। जब वह दुष्कर्म करेगा, परिणाम में उसे अनेकानेक शरीरों में जन्म प्राप्त कर दुःखों को कर्मफल भोगरुप में भोगना ही होगा।

अविद्यादि क्लेशों के फल के विषय में योगसूत्रकार लिखते हैं-

सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः। (योगदर्शन १/१३)

अविद्यादि क्लेशों के कारण ही जीवात्मा अच्छे-बुरे, शुभ-अशुभ कर्म करता है, उन्हीं कर्मों का फल वह जाति, आयु और भोग के रुप में प्राप्त करता है।

कर्मों का मूल क्लेश है (योगदर्शन २/३) जब तक धर्माधर्मरुप कर्माशय के मूल कारण अविद्यादि क्लेशों का क्षय नहीं होता तब तक उसका विपाक होता रहता है। जिस प्रकार तुषरहित दग्धबीजभाव चावल में अंकुरित होने का सामर्थ्य नहीं रहता उसी प्रकार विवेकज्ञान द्वारा उक्त क्लेशों के नष्ट हो जाने पर कर्माशय फल का आरम्भक नहीं रहता। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक कर्मफल भोगने के लिए बार-बार जन्म लेते रहना पड़ता है, क्योंकि कर्म ही शरीर की उत्पत्ति के कारण है।

- साभार- अन्तर्जाल

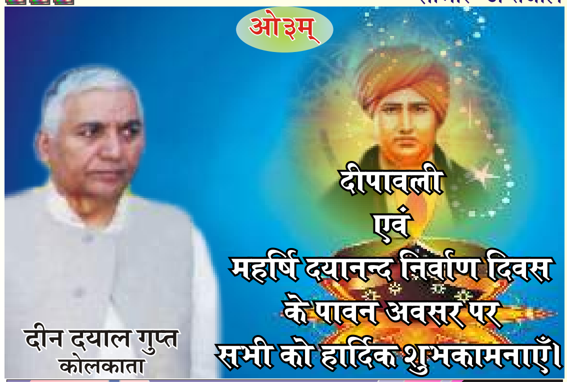

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

₹ 100 के स्थान पर अब ₹ 45 में उपलब्ध

सौ प्रतियाँ लेने पर ₹ 4000

(डाक खर्च अतिरिक्त)

₹ 15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।

Communism, Maligning Vedas, and the Repeated History

'VamMargi' is not a new terminology. Today we use this term for the communists, because one of the key tenets of communism is non-belief in the God. Today communism/ 'VamMargi' is also being used as a weapon to target the saffron fabric. But all this is not new; in fact this is history, repeating.

Since the ancient times, there always existed a section of people who 'wouldn't believe in God, and instead would believe in **eat, drink and go merry'. Such people were called "VamMargis".** Some 'VamMargis' went to the extent of mis-interpreting the Vedic literature in ways which would malign the Vedic philosophy and/or suit their philosophy. Their translations would typically prove the existence of unethical practices in Vedic literature such as the following:

- Drinking.
- Non-vegetarianism.
- Animal killing for Yajnas.
- Cow Killing.
- Extra marital affairs including between brother and sisters.etc

An Example

Ved Mantra used for 'convoluted intentions': 'RigVed 4.18.13'

1. Translation by 'Ralph Griffith':

In deep distress I cooked a dog's intestines. Among the Gods I found not one to comfort. My 'consort' I beheld in degradation. The 'falcon' then brought me the pleasant Soma. [This senseless translation proves injustice by God and justification of non-vegetarianism and drinking in vedas]

2. Translation by Dharma Dev Vidyamartand (based on Swami Dayanand): O king! I see you as one who provides protection from the wicked persons, who are capable of eloping away like

a 'falcon', even after disrespecting my wife. Such wicked persons cannot have genuine knowledge of the enlightened. You must severe your connections from such persons. [This translation, based on grammar by Panini and Patanjali, reminds a King of his duties]

When the Muslim rule started, aggressive attempts were made for mass conversions. Not successful, the attempt was to malign the Vedic literature, wherein the translations done by VamMargis came handy. Thanks to the

Bhakti Era literature, which undid this mal-attempt a lot that time.

Similarly, when the British could not make a firm foot in India, even after 300 years of their presence; the research, led by Macaulay (1837), prescribed maligning the Vedic literature. Herein again, the translations of VamMargis came handy. Max Muller, Ralph Griffith, and all western indologists totally ignored the work of Sayan, Madhvacharya, and Dayanand. Instead they picked up the fragmented works of VamMargis and did the English and European translations. Not only were the translations done, but were, and are being, taught in MA (Sanskrit, Philosophy, etc.) in all universities of India and World.

The history is repeating, again. The Abrahamic religions do now have a firm foot in India and are more desperate about conversions than ever. They have the Media on their side. The international media houses have bought most of the local language newspapers and magazine companies. The only articles being written on Vedic Literature in the main stream media, now, is using these convoluted translations. Common public is obviously dis-illusioned, because when they google the referred mantras, they get to see hundreds of pages giving the same "VamMargi" translations.

Another classic example used for convoluted intentions: **'RigVed 1.162'**.

Chapter 162 of Mandal 1 of Rigved has 22 Mantras. This chapter mainly deals with AshwaMedh Yajna, its preparations (including what to feed the Horse) and benefits. Thanks to Ramayana, **Hindus very well know that AshwaMedh Yajna is not killing of horses.** Never the less, worth noticing the translations (Mantras 3-5 only, to keep it short):

1. **Translation by 'Ralph Griffith':** Dear to all Gods, this 'goat', the share of Pūṭan, is first led forward with the vigorous Courser, while Tvaṭṭar sends him forward with the Charger, acceptable for 'sacrifice', to glory (3). When thrice the men lead round the Steed, in order, who goeth to the Gods as meet oblation, the 'goat' precedeth him, the share of Pūṭan, and to the Gods the sacrifice announceth (4). Invoker, ministering priest, atoner, fire-kindler Soma-presser, sage, reciter, with this well ordered sacrifice, well finished, do ye fill full the channels of the rivers (5). [The Yajna itself has been translated as sacrifice, followed by other mal translations]

2. **Translation by 'Dharma Dev** (based on Swami Dayanand)': The useful goat yields milk as a nutritive food for the horses. The best cereal made into pleasant food is possible only when cooked by an expert cook according to the techniques prescribed (3). Honorable are those men who own trained horses and other arrangements such as goats. It takes learned and brave persons to go around distant places

वधू चाहिये

आर्य परिवार के संस्कारित,

जन्म : 30-4-1989

कद : 5 फुट 9 इन्च, दिल्ली

सरकारी स्कूल में टी.जी.टी. स्थायी रूप से कार्यरत युवक हेतु प्रारम्भिक गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त

5 फुट 3 इन्च के लगभग कदवाली सुशील, सुन्दर, संस्कारित आर्य परिवार की वधू चाहिये ।

सम्पर्क : 9560049493

न्यास के परम हितैषी न्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय अग्रज श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के ७८वें जन्मदिवस के शुभावसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।

– अशोक आर्य

thrice during the Ashvamedha Yajna. Equally honorable is the leader who is to be primarily ordered by a King. Such a leader give good instructions to all (4). May the (HOTA) performer of the yajna, (ADHVARYU) non-violent officiating priest, (AVAYAH) unifier of all, (AGNIMINDHAH) kindler of fire, (GRAVAGARBHA) acceptor of the praises, (SHANSTA) admirer of noble virtues, (SUVIPRA) a wise and very intelligent person, perform the most desirable Yajna well and because of that fill the embankments of the rivers with pure water (5). [This translation, based on grammar by Panini and Patanjali, praises everyone participating in the Yajna]

Interpreting the Vedas have become a fashion, particularly by the intellectuals who have no clue of grammar of the Rishis. They keep on writing and re-writing the same communist stuff a hundred times, with different names and now in all local languages. However, the seeker can see some voices identifying the correct interpretation done by Sayan, Madhvacharya and Dayanand. 'What we need is more of such voices and echo, which shall expose the mal-intentions and help preserve our culture.'

{सायणाचार्य और माधवाचार्य निर्वचन भी निर्दोष नहीं है। -सम्पादक}

- By Virendra Agrawal
Bangalore

❑❑❑

आवश्यक सूचना

आदरणीय आर्यजन, आप अवगत ही हैं कि नवलखा महल स्थित आयावर्त्त चित्रदीर्घा किस प्रकार वेद के सन्देश, भारतीय संस्कृति तथा इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों, सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं के साथ महर्षि दयानन्द के दिव्य व्यक्तित्व व कृतित्व की सुगन्ध सहस्रों लोगों तक पहुँचाने में सफल हो रही है। इसी से प्रेरित हो एक 3D भव्य थियेटर तथा 4D संस्कार वीथिका के प्रकल्प को विकसित करने हेतु नवलखा महल में निर्माण कार्य चल रहा है जिसकी विस्तृत रूप रेखा शीघ्र ही आपके समक्ष रखी जाएगी। परन्तु इस निर्माण कार्य के चलते इस वर्ष 'सत्यार्थप्रकाश महोत्सव' स्थगित करना पड़ा है सो कृपया सूचित होवें। असुविधा के लिए खेद है।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ अ	१		त १		२	ई २	२	हीं २	
३	व ३		४	४ हीं			५	ख ५	
	६	ह्म ६			७ न	७		८	हीं ८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. मुक्त जीव की गति क्या कहलाती है?
२. मुक्ति में जीव का कौनसा शरीर साथ होता है?
३. कर्मों का कर्त्ता भोक्ता कौन है?
४. क्या ईश्वर कर्मों में लिप्त होता है?
५. किससे छूट जाने को मुक्ति कहते हैं?
६. मुक्ति में जीव किसमें रहते हैं?
७. क्या मुक्ति में जीव का ब्रह्म में लय हो जाता है?
८. मोक्ष में भौतिक शरीर अथवा इन्द्रियों के गोलक जीवात्मा के साथ रहते हैं अथवा नहीं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०८/१९ का सही उत्तर

१. मोक्ष २. अविद्या ३. चार ४. विद्या ५. बन्ध ६. नहीं ७. अधर्म ८. निमित्त ९. जड

"विस्तृत नियम पृष्ठ १४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ नवम्बर२०१९

अहिंसा परमो धर्म!

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

ईश्वर कृपा से धरती के सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य में इतना विवेक जग जाए कि वह संसार के सभी प्राणियों के प्रति दया व प्रेम का व्यवहार करना सीख जाए। जरा विचारें कि जब कोई कसाई किसी पशु को मारता है, चाहे वह धर्म के नाम पर, स्वाद के लिए, व्यापार के लिए अथवा उदरपूर्ति के लिए, उस समय कसाई वा मांस बेचने व खाने वाले प्रसन्न होते हैं और मूक निरीह पशु करुण क्रन्दन करते हैं, छटपटाते हैं। खून के नाले बहते हैं, कौवे, गिद्ध व कुत्ते आदि भी मांस के लालच में दौड़-२ कर आते हैं, मक्खियां भिनभिनाती हैं। कहीं हड्डियाँ बिखरी होती हैं, कहीं चमड़ा, कहीं मांस के लोथड़े, कहीं गोबर व मूत्र, कहीं शरीर के भीतरी अंग। कितना घृणित व गन्दा दृश्य होता है, परन्तु मांस खाने वाला मसाले व तेल मिलाकर उसे चटखारे के साथ खाता है, तो कोई इससे ईश्वर वा खुदा को प्रसन्न होता मानकर स्वयं को धर्मात्मा मानता है। धर्म के नाम पर पशु मारने व मांस खाने पर वे भी बधाई देते हैं, जो कभी न तो मांस खाते हैं और न मांसाहार के समर्थक हैं। क्या करें धर्म के नाम पर बुद्धिहीनता का यह खेल निराला है। क्या वह प्राणी भी उसी परमात्मा, जिसने हम सबको पैदा किया, का ही पुत्र नहीं है? तब क्या सभी प्राणी भाई-भाई नहीं है? अहो! सोचो? उसका भाई ही भाई के रक्त का प्यासा हो गया।

हे बुद्धिवाले मेरे प्यारे मानव विचारो! अपने अन्तरात्मा से विचारो कि क्या मांसाहार व पशुबलि वास्तव में धर्म है अथवा घोर पाप? मुझे विश्वास है कि आपका निर्मल आत्मा सत्य को स्वयं प्रकट कर देगा। पशुओं के शरीर से निकलने वाली पेन वेब्स न केवल वायुमण्डल अपितु सम्पूर्ण पृथिवी व ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती हैं। इस प्रभाव से पर्यावरण क्षत-विक्षत होता है, नाना प्राकृतिक प्रकोप आते हैं, नाना रोंगों का जन्म होता है, मन में काम, क्रोध, हिंसा के भाव उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार मांसाहार इस पृथिवी पर सर्वाधिक दु:ख देने वाला एवं अशान्ति का ताण्डव पैदा करने वाला है। अहो! किसी भूत प्राणी को हम एक मिनट के लिए भी जीवित नहीं कर सकते, तब उसे मारने का हमें क्या अधिकार है?

श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक
श्री वैदिक स्वस्ति पन्थान्यास, वेद विज्ञान मंदिर,
ग्रा.पो.- भागल-भीम, वाया-भीनमाल,
जिला- जालौर (राज.)- 343029

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग — कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया — उपमंत्री-न्यास

अल्पसंख्यकता मीठा जहर है

सर्वोच्च न्यायालय के सामने एक बड़ी मजेदार याचिका आई है। इस याचिका में अश्विनी उपाध्याय ने तर्क दिया है कि भारत में अल्पसंख्यक की परिभाषा बदली जाए। किसी भी मजहब के आदमी को अल्पसंख्यक घोषित करते समय उसके संप्रदाय के लोगों की संख्या का हिसाब राष्ट्रीय नहीं, प्रान्तीय आधार पर किया जाए। याने पूरे भारत की जनसंख्या में सिख अल्पसंख्यक हैं लेकिन पंजाब में वे बहुसंख्यक हैं। इसी तरह कश्मीर और लक्षद्वीप में मुसलमान बहुसंख्यक हैं लेकिन सारे भारत में उन्हें अल्पसंख्यक का दर्जा मिला हुआ है। ईसाई लोग मिजोरम, मेघालय और नागालैंड में बहुसंख्यक हैं लेकिन अखिल भारतीय स्तर पर वे अल्पसंख्यक हैं। अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए अल्पसंख्यक आयोग बना हुआ है। उनके हितों की रक्षा ही नहीं, उन्हें विशेष सुविधाएँ सारे देश में ही नहीं, उन प्रान्तों में भी मिलती हैं, जहाँ वे बहुसंख्यक हैं। जिन राज्यों में हिन्दू अल्पसंख्यक हैं, उन्हें वहाँ अल्पसंख्यकों की सुविधाएँ नहीं मिलतीं। क्यों नहीं मिलतीं? १९९२ के अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम में मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध और पारसी- इन पाँच समुदायों को मजहब के आधार पर अल्पसंख्यकों का दर्जा दिया गया था। इन पाँचों को ही क्यों, अन्य ५० को क्यों नहीं? इस तरह का दर्जा देना ही मेरी राय में गलत है। यह संविधान की मूल भावना के विरुद्ध है। एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में यह सबसे बड़ा मजाक है। मजहब के नाम पर १९४७ में यह मुल्क टूटा और उसी आधार को आपने फिर जिन्दा कर दिया। पंजाब और नागालैंड को भारत से अलग करने वाली माँग का क्या आप अनजाने ही समर्थन करते हुए नहीं लग रहे हैं? यदि भाजपा सचमुच राष्ट्रवादी पार्टी है तो उसे अल्पसंख्यकता के इस छलावे को तुरन्त ध्वस्त करना चाहिए। भारत की जनता की मजहबी पहचान को आपने इतनी अधिक सरकारी मान्यता दे दी है कि अन्तर्धार्मिक शादियाँ आसानी से नहीं हो पातीं। सच्चे लोकतंत्र और सच्चे राष्ट्रवाद के लिए यह निहायत जरुरी है कि आम नागरिकों की मजहबी और जातीय पहचान अत्यन्त व्यक्तिगत रहे। उसका सार्वजनिक और राजनीतिक रुप हो ही नहीं। किसी की वेशभूषा और नाम उसकी जातीय या मजहबी पहचान प्रकट करते हों तो उस पहचान को हतोत्साहित किया जाना चाहिए। किसी भी स्वस्थ लोकतंत्र में न तो कोई स्थायी अल्पसंख्यक हो सकता है और न ही बहुसंख्यक! हर चुनाव में अल्पसंख्यक बदलकर बहुसंख्यक हो सकते हैं और बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक! स्थायी अल्पसंख्यकता तो एक प्रकार से राष्ट्रीय एकता को कमजोर करनेवाला मीठा जहर है, जैसे कि जातीय आरक्षण है लेकिन हम क्या करें? सारे नेता और सारे दल थोक वोट या वोट बैंक के चक्कर में इसी मीठे जहर का सेवन भारत माता को कराते जा रहे हैं।

– प्रख्यात पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक

स्वास्थ्य

कब्ज की शिकायत दूर होती है

सभी जानते है कि पपीते का सेवन पेट के लिए अच्छा होता है। पपीते के छोटे-छोटे टुकड़े करके काली मिर्च का चूर्ण, सेंधा नमक और नींबू का रस मिलाकर सेवन करने से भोजन के प्रति अरुचि की शिकायत दूर होती है और भोजन सरलता से हजम हो जाता है। इसमे पपाइन नामक एंजाइम पाया जाता है, जो आहार को पचाने में अत्यन्त मददगार साबित होता है। इसके सेवन करने से मंदाग्नि की शिकायत दूर होती है। इसमें दस्त और पेशाब की समस्या को दूर करने का गुण है।

लीवर सिरोसिस और कैंसर से बचाव

पपीते और नींबू का रस लीवर सिरोसिस के लिए काफी लाभदायक घरेलू उपाय है। पपीता लीवर को काफी मजबूती प्रदान करता है और नींबू लीवर को पित्त (बाइल) के उत्पादन में सहायता करता है और शरीर से विषाक्त पदार्थ को निकालने में भी मदद करता है। इसलिए हर रोज दो चम्मच पपीते के रस में आधा चम्मच नींबू का रस मिलाकर पिएँ। इस बीमारी से पूरी तरह निजात पाने के लिए इस मिश्रण का सेवन तीन से चार सप्ताहों के लिए करें। इसके सेवन से कोलन कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर और ब्लड कैंसर आदि की कैंसर कोशिकाओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

आँखों के लिए फायदेमन्द

नींबू और पपीते में मौजूद विटामिन ए आँखों की कमजोरी को दूर करता है। पपीते में कैल्शियम, कैरोटीन के साथ विटामिन ए, विटामिन बी, और सी, डी की भरपूर मात्रा होती है। जो आँखों की दिक्कतों को खत्म करती है। इसके सेवन से रतौंधी रोग का निवारण होता है और आँखों की ज्योति बढ़ती है। आँखों की दृष्टि अच्छी बनाएँ रखने के लिए इसका सेवन जरूर करें। जिन बच्चों को कम उम्र में ही चश्मा लग जाता है उनके लिए यह बेहद लाभकारी होता है। इसके अलावा विटामिन ए भी उम्र से सम्बन्धित धब्बेदार पतन के विकास को रोकता है और आँखों के लिए स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है।

वजन घटाने में कारगर

नियमित रुप से सुबह खाली पेट पपीते और नींबू के रस का सेवन करें। नींबू और पपीते में पेक्टिन फाइबर प्रचुर मात्रा में होता है जो भूख की प्रबल इच्छा से लड़ने में मदद करता है और आप एक लम्बे समय के लिए तृप्त महसूस करते हैं। पेट को भरा-भरा महसूस करवाने के साथ यह आंतों के कार्यों को ठीक रखता है जिसके फलस्वरूप वजन घटाना आसान हो जाता है। इसके बाद अपना वजन चेक करें उसमें निश्चित ही कमी दिखेगी। इसके सेवन से कमर की अतिरिक्त चर्बी कम होती है और ब्लडप्रेशर ठीक रहता है।

नींबू और पपीता फाइबर, विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है और धमनियों में कोलेस्ट्रॉल के निर्माण को कम करता है। बहुत अधिक कोलेस्ट्रॉल का निर्माण धमनियों को ब्लॉक कर सकता है और दिल का दौरा पड़ने का कारण बन सकता है। नींबू का सेवन नसों में निरन्तर रक्त संचार सुचारु करने में सक्षम है। और दिल के दौरे और अटैक को रोकने में सक्षम है। नींबू में पोटाशियम भी होता है जो ब्लड प्रेशर नियंत्रित करता है और ब्रेन एवं नर्व सिस्टम को दुरुस्त करता है। पपीते में भी ब्लडप्रेशर ठीक करने के प्राकृतिक गुण छिपे हुए हैं। इन दोनों के सेवन से कुछ समय के लिए उसका शरीर रिलैक्स हो जाता है क्योंकि उसके शरीर से तनाव दूर करने वाले हारमोन्स की मात्रा बढ़ जाती है। इनमें मौजूद कई पोषक तत्व, शरीर को, मौसम बदलने के साथ होने वाले संक्रमणों से दूर रखने में मदद करते हैं।

साभार- अन्तर्जाल

समाचार

राष्ट्र कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

अध्यात्म पथ मासिक पत्रिका द्वारा देश धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों की स्मृति में राष्ट्र कल्याण महायज्ञ, भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्य समाज, पश्चिम विहार, दिल्ली में किया गया। श्री भारतभूषण जी साहनी की अध्यक्षता में सम्पन्न इस कार्यक्रम में वेस्ट जोन के चेयरमैन श्री कैलाश सांखला, मुख्य अतिथि थे और आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, मुख्य वक्ता थे। श्री नरेन्द्र आर्य सुमन ने अपने भजनों के द्वारा श्रोताओं के मन को मोह लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के विभिन्न संगठनों के अनेक पदाधिकारियों की उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा में अभिवृद्धि हुई।

- अश्विनी नागिया, प्रबन्ध सम्पादक

वेद कथा सम्पन्न

आर्य समाज, नरवाना के तत्वावधान में दिनांक २० अगस्त से २४ अगस्त तक वेद कथा का आयोजन किया गया। जिसमें दार्शनिक प्रवक्ता आचार्य डॉ. महावीर जी मुमुक्षु, मुरादाबाद के सारगर्भित उद्बोधनों के साथ-साथ विख्यात भजनोपदेशिका अलका आर्या, नोएडा के भजनोपदेशों ने श्रोताओं का मन मोह लिया। इस अवसर पर स्वामी रामवेश जी (प्रधान नशामुक्ति परिषद्) हरियाणा की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

- विजय कुमार आर्य, मंत्री

आर्य समाज, बिजयनगर के निर्वाचन सम्पन्न

दिनांक ४ अगस्त २०१६ को राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, जयपुर के उपप्रधान श्री मदनलाल जी आर्य के निर्देशन में आर्य समाज, बिजयनगर के चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें श्री यज्ञसेन जी आर्य एवं अन्य चार आर्यजनों को संरक्षक मनोनीत किया गया। साथ ही श्री जगदीश प्रसाद जी आर्य, श्री ओमप्रकाश जी आर्य एवं श्री कैलाश चन्द्र जी आर्य को क्रमशः प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष पद का दायित्व सर्वसम्मति से सौंपा गया। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से सभी पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

प्रेषक- जगदीश प्रसाद आर्य, प्रधान

आत्मशुद्धि आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ का ५३वां स्थापना दिवस बड़े श्रद्धोपेत वातावरण में २६ सितम्बर से २ अक्टूबर २०१६ तक आयोज्य है। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र आचार्य, नोएडा रहेंगे। साथ ही प्रमुख वक्तागणों में स्वामी रामानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, डॉ. मुमुक्षु आर्य एवं आर्य तपस्वी सुखदेव जी वर्मा रहेंगे। समस्त कार्यक्रम पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आश्रम के निर्देशन में सम्पन्न होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति २ अक्टूबर २०१६ को होगी।

- दर्शन कुमार अग्निहोत्री, मंत्री

गुरुकुल राजघाट में भव्य रजत जयन्ती समारोह

गुरुकुल राजघाट की स्थापना के २५ वर्ष पूर्ति उपलक्ष्य में एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के सर्वाधिक पदार्पण की प्रथम स्थली एवं प्रथम शास्त्रार्थ के १६१ वर्ष पूर्ति की स्वर्ण शताब्दी वर्ष के अवसर पर उक्त आयोजन ११ से १३ अक्टूबर तक राजघाट, गंगातट पर आयोज्य है। समारोह के अध्यक्ष माननीय दीनदयाल जी गुप्त एवं स्वागताध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती रहेंगे। अन्य अनेक विद्वान् संन्यासी एवं गणमान्य आर्यजन इस अवसर पर उपस्थित होंगे जिनमें माननीय श्री प्रतापचन्द्र सारंगी, राज्यमंत्री, भारत सरकार माननीय स्वामी सुमेधानन्द जी,सांसद, सीकर एवं डॉ. सोमदेव शास्त्री मुम्बई रहेंगे।

गुरुकुल हरिपुर में दशम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

११ अगस्त २०१६ को श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन देव आचार्य के सान्निध्य में तथा दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में उक्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर २० ब्रह्मचारियों का उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार कराया गया। विभिन्न आर्य समाजों से शताधिक महानुभाव एवं आर्य सज्जन उपस्थित थे।

'सफलम् भवतु' शिविर का सफल आयोजन

दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर, रोहतक, हरियाणा के तत्वावधान में १६ से २० अक्टूबर २०१६ तक, युवाओं की भौतिक एवं आध्यात्मिक सफलता के लिए 'सफलम् भवतु' शिविर का आयोजन किया जा रहा है। १७ वर्ष से ४५ वर्ष आयु के, न्यूनतम १२वीं कक्षा तक शिक्षित व्यक्ति शिविर में भाग लेने के पात्र होंगे। शिविर के निदेशक स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के अतिरिक्त आचार्य ईश्वरानन्द, डॉ. राधावल्लभ जी, स्वामी शान्तानन्द जी, श्री अरविन्द राणा जी एवं आचार्य प्रियेश जी आदि प्रशिक्षक की भूमिका का निर्वहन करेंगे।

(सम्पर्क सूत्र- 7027026175, 7027026176)। - दर्शन योग महाविद्यालय

शोक संवेदना

माता अन्नपूर्णा जी का निधन

(स्मृतिशेष) श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा का नाम उदयपुर के आर्य जगत् में अत्यन्त श्रद्धा के साथ लिया जाता है। आपके दोनों पुत्र श्री अतुल शाण्डिल्य एवं श्री संजय शाण्डिल्य एवं उनका परिवार आर्य समाज से पूरी तरह जुड़ा हुआ है। इनकी माता जी श्रीमती अन्नपूर्णा शर्मा जी का नगर की सभी आर्य सामाजिक गतिविधियों पर आशीर्वाद रहता था। विधाता के अटल नियम के अन्तर्गत दिनांक ७ सितम्बर २०१६ को प्रातःकाल माता जी का निधन हो गया। उदयपुर के सभी आर्यजन उनके वियोग से दुःख का अनुभव कर रहे हैं। न्यास पर भी माताजी का पूरा आशीर्वाद रहता था। हम सभी उनकी कमी को सदैव महसूस करेंगे। यह हमारी अपूरणीय क्षति है। ईश्वरीय इच्छा के आगे सिर झुकाते हुए यही विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धाञ्जलि।

- अशोक आर्य

हलचल

युवा संस्कार अभियान

श्रावणी पर्व के अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य के नेतृत्व में ६ दिवसीय सघन वेद प्रचार का अभियान चलाया। जिसमें १० अगस्त से १८ अगस्त २०१६ तक ४४ कार्यक्रम किए गए। श्री अनिल आर्य को इस उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई एवं शुभकमानाएँ।

– भवानीदास आर्य, मंत्री, न्यास

राजभेंट को बदलकर 'ओ३म् एवं गायत्री मंत्र' किया गया

सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी द्वारा सिक्किम राजभवन की ओर से भेंट किए जाने वाले राजभेंट को बदलकर ओ३म् एवं गायत्री मंत्र किया गया। गत दिनों सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य एवं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने राजभेंट का अनावरण किया। इस पवित्र कार्य के लिए राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से अनेकानेक साधुवाद।

– डॉ. अमृतलाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

देशभक्ति एवं वीररस की काव्य प्रतियोगिता सम्पन्न

स्वतंत्रता सैनानी श्री हरिसिंह जी आर्य (स्वामी सेवानन्द जी) की पुण्यतिथि पर आर्य समाज, कृष्णपोल बाजार में कक्षा ६ से कक्षा १२ तक के छात्र-छात्राओं के द्वारा अति सुन्दर काव्य प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की गईं। कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि प्रो. रासासिंह जी रावत, पूर्व सांसद, श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यकारी प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री एम.एल. गोयल, पूर्व निदेशक-डीएवी थे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त माननीय न्यायाधिपति श्री एस.एस. कोठारी थे। वरीयता प्राप्त छात्र-छात्राओं को पारितोषिक वितरण किए गए।

– गोविन्द पारिक एवं 'सत्यार्थ भूषण' सरोज वर्मा

आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन

'आर्य रत्न' ठाकुर विक्रम सिंह जी के पावन जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक २७ सितम्बर २०१६ को प्रातः १० से २.३० तक तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य सनातन रक्षा सम्मेलन बड़ी भव्यता के साथ मनाया गया। जिसमें आर्य जगत् के अनेक विद्वान् उपस्थित थे। डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. पुष्पेन्द्र कुलश्रेष्ठ एवं डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी इत्यादि मनीषियों ने देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों पर अपने उद्बोधन प्रस्तुत किए।

– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, संयोजक

गुरुकुल के छात्र ने नाम रोशन किया

बड़े गर्व का विषय है कि ब्राजील में आयोजित आई.एस.एफ.एफ. विश्वकप २०१६ में गुरुकुल पौंधा, देहरादून के स्नातक दीपक कुमार ने भारत की अपूर्वी चन्देला के साथ मिश्रित युगल में १० मीटर एयर राइफल स्पर्धा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से गुरुकुल के आचार्यों एवं श्री दीपक कुमार को बहुत-बहुत बधाई।

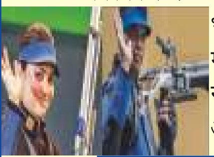

प्रतिस्वर

बन्धुवर, श्री अशोक जी। नमस्ते!

सत्यार्थ सौरभ का नवीनतम अंक मिला तदर्थ आभारी हूँ। निश्चय ही आपकी सूझबूझ, परिश्रम, अन्वेषण और लगन से पत्रिका में नित नवीन निखार आ रहा है। लेख भी शोधपरक होते हैं। मैं समझता हूँ कि आर्यसमाज की शिथिल होती हुई गति में यह पत्रिका नव संचार कर सकेगी। अन्धविश्वास की समस्या बेहद जटिल है। नीबू मिर्ची हो या फिर भूतप्रेत, ऊपर की हवा हो या धूर्त ज्योतिषीय प्रपञ्च, इन बुराईयों को नष्ट तो करना ही होगा। 'तर्क ऋषि को जेल' वाली आपकी रचना का समापन अंश मुझे कुछ अपूर्ण लगा। पाठक को यह भी पता होना जरूरी है कि वह इन सबसे बचने के लिए आखिर करे क्या? धन्यवाद।

– डॉ. सत्यदेव आजाद, मथुरा

हँसमुख भाई परमार का निधन

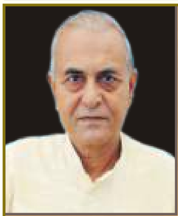

गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री कर्मनिष्ठ समर्पित एवं अनन्य ऋषिभक्त और गुजरात में आर्य समाज की गतिविधियों को निरन्तर प्रगति देने वाले श्री हँसमुख भाई परमार दिनांक २४ अगस्त २०१६ को अचानक हमें छोड़कर चले गए। उनका सम्पूर्ण जीवन, उसका एक एक क्षण माँ आर्य समाज की सेवा में ही व्यतीत हुआ। ऐसे व्यक्तित्व का अभाव आर्य जगत् में सदैव अनुभव किया जाता रहेगा। परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

– अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष- न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली – ०८/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ०८/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री परमजीत कौर; नारायण विहार (नई दिल्ली),श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री श्रृयांशु गुप्ता; मनियाँ, श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री गोरवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री हर्षवर्धन आर्य; नेमदारगंज, श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजय नगर (इन्दौर), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री सोमपाल सिंह यादव; रामपुर, श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), प्रधान जी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी; बीकानेर (राज.), श्री गणेशदत्त गोयल; बुलन्दशहर, श्री ब्र. विशाल आर्य गुड़ा; विश्नोईया, श्री फूलसिंह यादव; मुराद नगर, श्री रामदत्त आर्य; मनियाँ धोलपुर), सुप्रिया चावला; जालन्धर, कंचन सोनी, बीकानेर (राज.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १४ पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

ईश्वर का स्वरूप

इसीलिये याज्ञवल्क्य ऋषि ने गार्गी से कहा था- 'ब्रह्म के जानने वाले उसे अक्षर, अविनाशी, कूटस्थ कहते हैं। वह मोटा है न पतला, न छोटा है न लम्बा, न अग्नि की तरह लाल है। वह बिना स्नेह के है। बिना छाया के और बिना अंधेरे के है। वायु है न आकाश है। वह अप्रसंग है। रस से रहित, गन्ध से रहित। उसके नेत्र नहीं, कान नहीं, वाणी नहीं, मुख नहीं, मात्रा नहीं।'

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैंः-

बिन पग चले, सुने बिनु काना, कर बिनु कर्म करे विध नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्ता बड़ योगी।

आद्य शंकराचार्य जी ने बड़े ही प्रबल शब्दों में साकारता का विरोध ही नहीं किया, ईश्वर को साकार मानने वालों का उपहास किया है। कम से कम उनके द्वारा स्थापित पीठों पर विराजे जगद्गुरुओं को तो उनकी बात स्वीकार करनी चाहिये।

'परा पूजा' में शंकराचार्य जी लिखते हैंः-

(क) अखंड, सच्चिदानन्द, एकमात्र निर्विकल्परूप परमात्मा की पूजा कैसे हो सकती है? ध्यातव्य है साकारता परमात्मा के अखण्डत्व का निषेध कर देती है।

(ख) जो सर्वव्यापक है उसका वाहन कैसा? जो सर्वाधार है उसके बैठने के लिए आसन की क्या आवश्यकता है?

(ग) जिसके उदर में ब्रह्माण्ड समाया है उसे वस्त्र कैसे पहनाऐंगे?

(घ) जो निर्विशेष है उसे वेशभूषा की क्या आवश्यकता?

(ड.) जो स्वयं आनन्द से परिपूर्ण पूर्ण तृप्त है उसके लिए नेवैद्य कैसा?

(च) वह अनन्त है उसकी प्रदक्षिणा संभव नहीं।

ईश्वर की साकारता सृष्टि की रचना करने में बाधक है।

ईश्वर निराकार है-

न च कर्त्तुः करणम्। (वेदान्त दर्शन २/२/४३)

जगत्कर्त्ता परमात्मा के करण= इन्द्रिय या शरीर नहीं है।

इसी तथ्य को महर्षि दयानन्द इस प्रकार लिखते हैं-

'जैसे तुम और हम साकार अर्थात् शरीरधारी हैं इससे त्रसरेणु अणु, परमाणु, प्रकृति को अपने वश में नहीं ले सकते और न उन सूक्ष्म पदार्थों को पकड़कर स्थूल बना सकते हैं। वैसे ही स्थूल देहधारी परमेश्वर भी उन सूक्ष्म पदार्थों से स्थूल जगत् नहीं बना सकता। (स.प्र. अष्टम समु.) वेदान्त दर्शन में बड़े ही स्पष्ट रूप में कहा हैं-

पत्युरसामञ्जस्यात्। (वेदान्त दर्शन २/२/३७)

(असामञ्जस्यात्) युक्ति शून्य होने से (पत्युः) साकार ईश्वरवादी मत ठीक नहीं

अरूपवदेव हि तत्प्रधानत्वात्। (वेदान्त दर्शन ३/२/१४)

ईश्वर निराकार है, वह उपाधि सम्बन्ध होने पर भी साकार नहीं होता।

ईश्वर को साकार मानने में ईश्वर में अनेक दोष उत्पन्न होते हैं। यहाँ संक्षेप में संकेत मात्र ही है।

१. ईश्वर ही केवल मात्र आनन्द का ऐसा भण्डार है जिसमें दुःख का लेश भी नहीं है। परन्तु कोई भी साकार या शरीरधारी दुःख से नहीं बच सकता। सर्दी, गर्मी, भूख-प्यास, भय, शोक, रोग, बुढ़ापा, मृत्यु आदि प्रत्येक साकार या शरीरधारी को सताते ही हैं। अतः साकार मानने पर ईश्वर आनन्दस्वरूप नहीं रहता।
२. साकार वस्तु में परिवर्तन होता ही है अतः ईश्वर को साकार मानने पर वह निर्विकार नहीं रह पायेगा।
३. कोई भी साकार वस्तु चाहे वह कितनी भी विशाल हो, होगी एकदेशीय ही। अतएव ईश्वर को साकार मानने पर वह सर्वव्यापक नहीं रहता।
४. प्रत्येक साकार पदार्थ उत्पन्न भी होता है और विनष्ट भी, अतएव ऐसा मानने पर ईश्वर न अनादि रहेगा और न अनन्त।
५. साकार होने से सर्वव्यापक नहीं और सर्वव्यापक अर्थात् कण-कण में विद्यमान न होने से स्थान-दूरी के कारण सर्वज्ञ भी नहीं हो सकता। इसी कारण ईश्वर अन्तर्यामी न होने से प्रत्येक के मन की बात न जान पायेगा। ऐसा न होने से ईश्वर ठीक-ठीक न्याय कर पावेगा, इसमें भी सन्देह रहेगा।
६. परमात्मा को साकार मानने पर स्वयं अन्य आधार पर आश्रित होने से सर्वाधार नहीं रहेगा। फिर इस प्रश्न का क्या उत्तर होगा कि यह समस्त सृष्टि किसके आधार पर टिकी है? और अगर परमात्मा पराधार ही है तो सृष्टि रचना से पूर्व जब पृथ्वी नहीं थी तो वह किस आधार पर टिका था? अतः परमात्मा को साकार मानना पूर्णतः मिथ्या है।

ईश्वर निराकार है-

यत्तदद्रे(दृ)श्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं तदपाणिपादं।
नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः।।

- मुण्डकोपनिषद् १/१/६

यह परमेश्वर अदृश्य, अग्राह्य, गोत्ररहित, वर्णरहित, अनेत्र, बिना हाथ पैर के है, नित्य, सर्वव्यापक, अतिसूक्ष्म तथा अव्यय है। उसको धीर पुरुष देखते हैं।

साकारवादियों के मान्य विद्वान् महीधर यजु.४०/८ में स्पष्ट स्वीकार करते हैं कि परमात्मा स्थूल शरीर वा लिंग शरीर से रहित है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

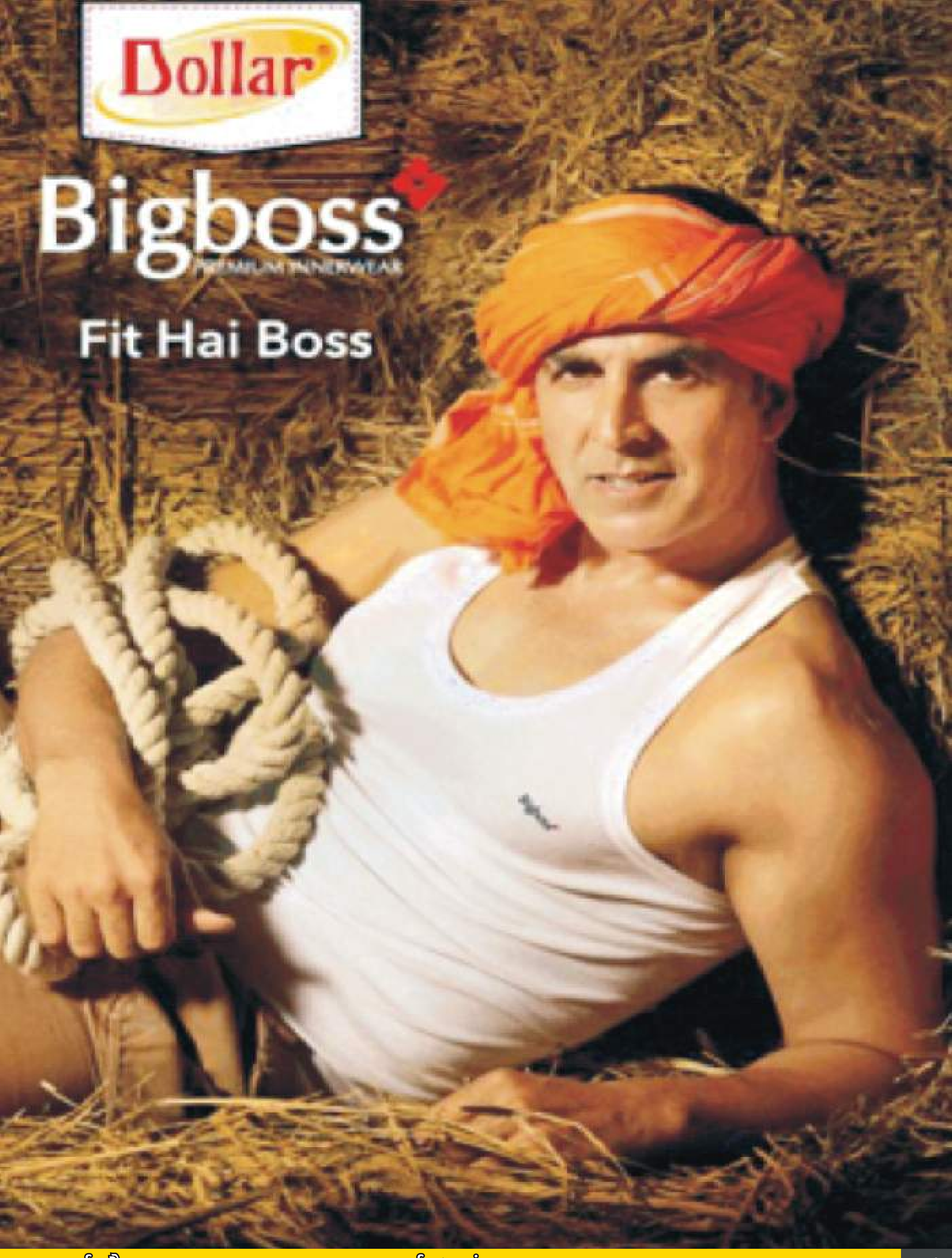

Dollar
Bigboss
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

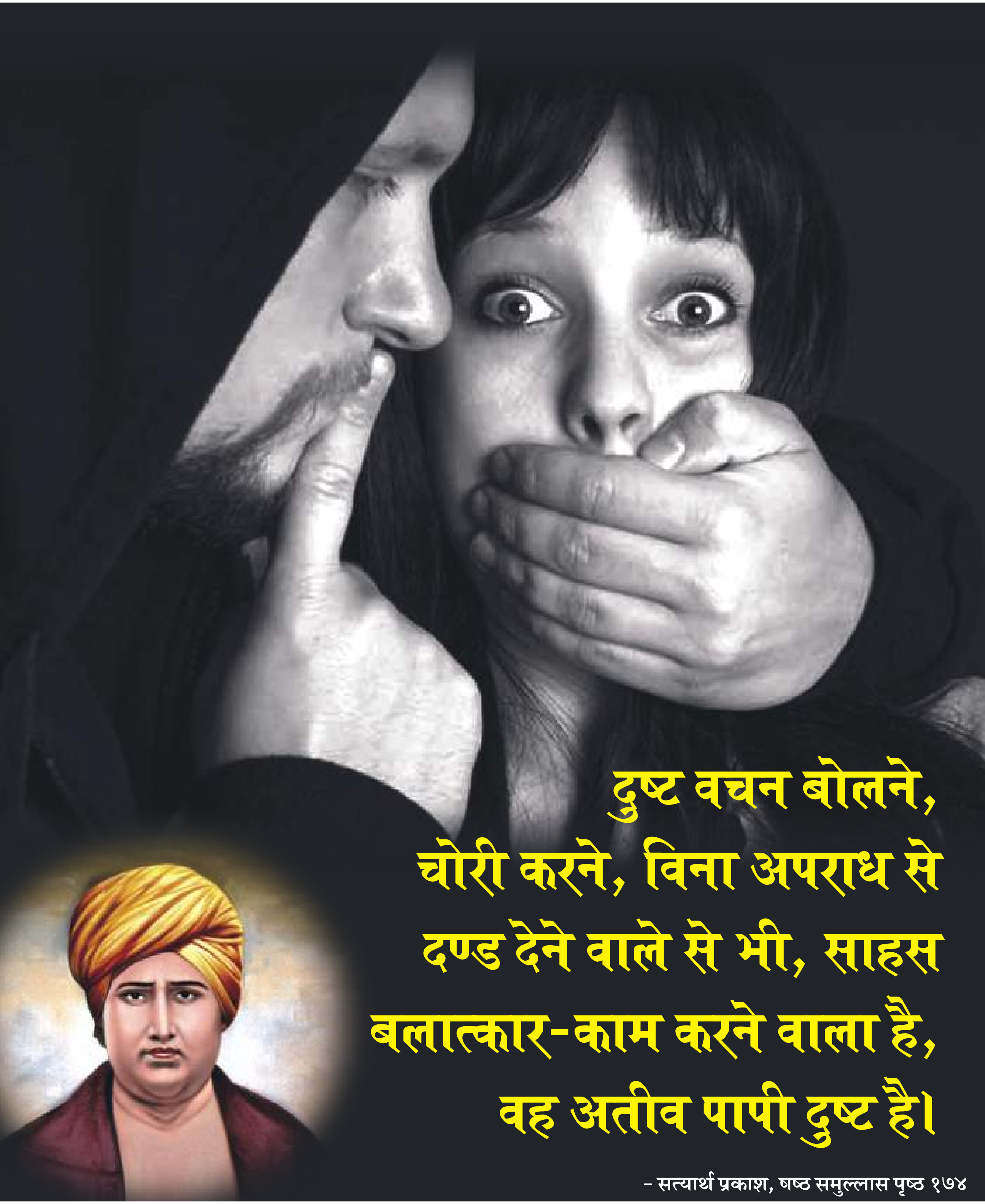

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर